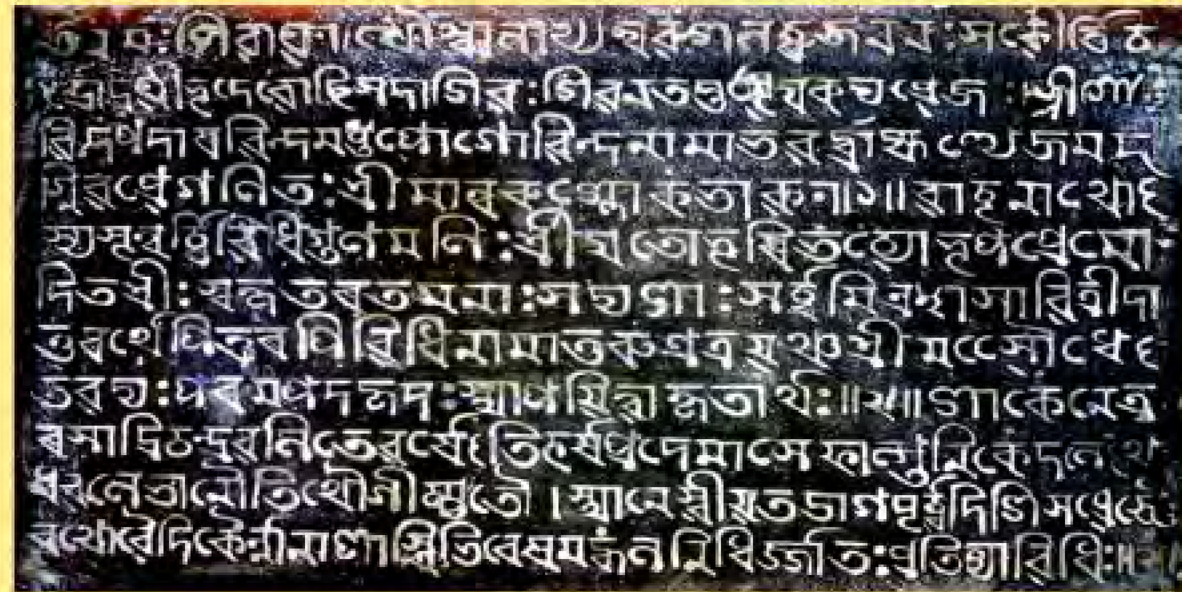




मैथिली साहित्य संस्थानक प्रमुख उद्देश्य :-

(क) मैथिली भाषा एवम् साहित्यक सर्वाङ्गीण विकास।

(ख) मिथिला भारती नामक त्रैमासिक शोध साहित्यिक पत्रिकाक प्रकाशन एवम् विक्रय।

(ग) मिथिला, मैथिल एवम् मैथिलीक सम्बन्ध मे अनुसंधान एवम् शोधकार्य।

(घ) लोककला, हस्तकला' शिल्पकला एवम् लोकभाषाक विकास।

Mithilā Bhāratī

Vol.- 07, 2020 No. I-IV

ISSN 2349-834X

मिथिला-भारती
Mithilā Bhāratī

त्रैमासिक शोध-पत्रिका

Vol.- 07 2020 No. I-IV



संपादक

शिव कुमार मिश्र

भैरव लाल दास



प्रकाशक

मैथिली साहित्य संस्थान, पटना

www.maithilisahityasansthan.org.

ISSN 2349-834X

मिथिला-भारती

Mithilā Bhāratī

त्रैमासिक शोध-पत्रिका

भाग-7 2020ई. अंक I-IV



संपादक

शिव कुमार मिश्र
भैरव लाल दास

प्रकाशक
मैथिली साहित्य संस्थान, पटना
www.maithilisahityasansthan.org.

Mithilā Bhāratī
Bilingual Quarterly Research Referral Journal
Approved by University Grant Commission (UGC-CARE LIST)

Published by
Maithili Sahitya Sansthan,
B-402, Shri Ram Kunj Apartment, Road No.-4,
Mahesh Nagar, P.O. Keshri Nagar, Patna-800024.
Phone : 09430606724 & 09835884843
Email : blds412@gmail.com & skmishra2612@gmail.com

Editors : Dr. Shiva Kumar Mishra
Shri Bhairab Lal Das

Technical Advisor : Jayant Kumar

Year - 2020

ISSN 2349-834X

सहयोग राशि : ₹ 500 (पाँच सय टाका मात्र)
Price - Rs. 500 (Five Hundred only)

प्रकाशक : **मैथिली साहित्य संस्थान, पटना**

मुद्रक– आदित्य इंटरप्राइजेज, पटना
मो. 9576099416, email : rakeshprints224@gmail.com

मिथिला-भारती
Mithilā Bhāratī

भाग-7 2020 ई. अंक I-IV

विषय-सूची

सम्पादकीय

नवांक श्रृंखलाक सातम भाग प्रस्तुत करैत अपार हर्ष भय रहल अछि जे **मिथिला-भारती** वर्तमान समयमे मैथिलीये नहि अपितु बिहार-झारखंड अथवा देसक कोनो भाषाक शोध-पत्रिका सँ पाछू नहि रहल। विश्वविद्यालय अनुदान आयोगक केयरलिस्टमे एकर स्थान भेटलासँ एकर स्तर ओ सम्मान आओरो बढ़ि गेल अछि। मैथिली साहित्य संस्थानक सहयोगी लोकनिक कठिन परिश्रम ओ समर्पण सँ **मिथिला-भारती** एहि स्थतिमे आबि सकल अछि। एकटा क्षेत्रीय शोध-पत्रिका रहितहुँ राष्ट्रीय ओ अंतर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिकाक सम्मान पाबयमे ई पत्रिका सफल रहल अछि। एकर स्तर देखि पैघ सँ पैघ शोधज्ञ अपन नवीनतम शोधालेख प्रकाशित करयबाक लेल आतुर रहैत छथि।

एहि वर्ष संस्थान अपन वेबसाइटकेँ विस्तार दय मिथिलाक सांस्कृतिक परम्परा विषयक शोध-सामग्री अपलोड करबाक प्रक्रियामे अछि। एहि लेल देश-विदेशक विद्वान द्वारा एहि विषयपर लिखल शोध-ग्रंथ ओ शोध-पत्रिकाक संकलन कएल जा रहल अछि। आशा अछि जे संस्थानक प्रयास सँ संसार भरिक अध्येता लोकनि मिथिलाक संदर्भमे लाभ पाबि सकताह। एहि गंभीर काजमे जुटल संस्थानक तकनीकी परामर्शी श्री जयंत कुमारक प्रयास प्रशंसनीय अछि।

मिथिलाक भाषा, लिपि, पुरातत्व, इतिहास, सांस्कृतिक ओ प्राकृतिक धरोहरि ओ स्वतंत्रता सेनानी विषयक कार्यशाला ओ संगोष्ठीसभक आयोजन उत्साहवर्द्धक रहल। एहि क्रमे कतोक शोधालेख प्राप्त भेल। पुरातात्विक सर्वेक्षणकार्य अनवरत चलि रहल अछि ताहि सँ संबंधित शोधालेख नव उपलब्धि अछि। संस्थानक पूर्व अभिभावक प्रोफेसर (डा.) हेतुकर झाक विद्यापतिक पुरुषार्थक अवधारणा विषयक शोधालेख **धीमहि** पत्रिकामे अंग्रेजीमे प्रकाशित भेल छल जकर मैथिली भाषान्तर प्रकाशित करबाक इच्छा स्व. झाक रहनि। तद्नुसार डा. योगानन्द झाक मैथिली भाषान्तर प्रकाशित भय रहल अछि। अन्तर्राष्ट्रीय लब्धप्रतिष्ठ भाषाविद् प्रोफेसर (डा.) रामावतार यादवक शोधालेख ओ पोथी परिचयक संगहि स्वतंत्रता सेनानी विषयक आलेख डा. अवनीन्द्र कुमार झा, डा. पंकज कुमार झा ओ

डा. सुशांत कुमारक एहि अंकमे संकलित अछि मुदा स्वर्गीय पंचानन मिश्रक 'स्वतंत्रता आंदोलनमे मैथिलानीक योगदान' विषयक आलेख संस्थानक धरोहरि थिक। वस्तुत: दरभंगाक स्वतंत्रता सेनानी विषयक जे संगोष्ठी दरभंगामे आयोजित भेल छल से स्वर्गीय पंचानन बाबूक प्रेरणा छल। मैथिली भाषा विषयक शोधालेख गौहाटी विश्वविद्यालयक विदुषी डा. दीपामणि हालै महन्तक प्रस्तुत अछि जे अनुकरणीय अछि। गाँधीजीक मिथिला भ्रमण ओ प्राचीन मिथिलामे वैष्णवमतक अलावे पुरातात्विक सर्वेक्षण प्रतिवेदन संकलित अछि तऽ डा. अबिनाश कुमार झाक पर्यटन सऽ संबंधित प्रतिवेदन सेहो अछि। 'मिथिलाक कला ओ पुरावशेष विषयक अंतर्राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी दरभंगामे भेल छल ताहिमे डा. जलज कुमार तिवारी, प्रोफेसर डा. अशोक कुमार सिंह, डा. भोगेन्द्र झा ओ डा. इस्फाक खाँक शोधालेख प्राप्त भेल छल तहिना मिथिलाक दुर्लभ धरोहरि महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह द्वारा संगृहीत कलावस्तुक संरक्षण कार्य एखन चलि रहल अछि। भारत सरकारक राष्ट्रीय सांस्कृतिक संपदा संरक्षण अनुसंधानशाला, लखनऊ द्वारा प्रमोद कुमार पाण्डेयक नेतृत्वमे संरक्षणकार्य प्रगति पर अछि जिनक संरक्षण प्रतिवेदन प्रकाशित भय रहल अछि। पश्चिम विदेहक संदर्भ प्रोफेसर (डा.) समरेन्द्र नारायण आर्यक प्रस्तुत अछि।

उपरोक्त शोधालेख प्रदाता लोकनिक संगहि संपादक मंडलक विशेषज्ञ सदस्य ओ अभिभावक लोकनिक सहयोगक लेल सादर आभार। आशा अछि ई सिनेह आगुओ बनल रहत।

एहिबेर अपन कतोक विद्वान ओ धरोहरि सेनानीक स्वर्गवास भेला सँ मिथिलाक विद्वत् समाज मर्माहत अछि। एक वर्षक भितर जतेक सक्रिय कर्तव्यनिष्ठ लोकनि सँ हमरा लोकनि विमुख भेलहुँ अछि तकर पूर्ति असंभव अछि। कतोक साहित्यिक ओ शोध कार्य योजना पर काज करैत पंचानन मिश्रकेँ कोरोना महामारी अपन ग्रास बना लेलक। नेपालमे पुरातात्विक उत्खनन करबैत बरिष्ठतम पुरातत्वविद डा. तारानंद मिश्रक ब्रेन हेमरेज सँ निधन भय गेलनि तहिना चेचर संग्रहालयक संस्थापक ओ प्रसिद्ध धरोहरि सेनानी राम पुकार सिंह, प्रसिद्ध आलोचक ओ साहित्यकार डा. खगेन्द्र ठाकुर, मैथिलीपुत्र प्रभुनारायण झा प्रदीपजी ओ साहित्यकार प्रो. वीणा कर्णक हृदयाघात सँ निधन भऽ गेलनि। हिनका लोकनिक निधन सँ मैथिली साहित्य संस्थानक अपूरणीय क्षति भेल अछि। हिनका लोकनिक अतिरिक्त आओर कतोक मैथिल विद्वान ओ सेनानीसभक निधन एहि वर्ष विविध कारणसँ भय गेल। संस्थान अत्यंत दुखी अछि।

सादर नमन ओ विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित।



मिथिला आऽ गाँधी

- **शिव कुमार मिश्र**

चम्पारण राजा जनकक भूमि थिक।[1] गाँधीजीक ई उक्ति स्पष्ट करैत अछि जे गाँधीजी चम्पारणके राजा जनकक भूमि अर्थात् मिथिला मानैत छलाह। एहि उक्ति सऽ ईहो स्पष्ट होइछ जे राजा जनकक परिचिति हुनक कृषि प्रेम सऽ अछि। राजा जनक हर चलौने छलाह जाहिमे सीता उत्पन्न भेल रहथि।[2] अर्थात् महात्मा गाँधी नीक जकाँ जनैत छलाह जे मिथिलामे खेतीक महत्ता राजा जनकक समय सऽ छल तैं जनकजी हर चलौलनि। महाकाव्यक ई प्रमाण गाँधीजीकेँ मिथिला दिस आकृष्ट कयलक। ओना चम्पारणक पछबारि सीमामे अवस्थित गण्डक धार मिथिलाक पछबारि सीमा छल।[3] तहिना **बृहद्विष्णुपुराण**[4] सँ सेहो एकर समर्थन होइछ। **शक्तिसंगमतंत्र**[5] चम्पारणक पश्चिम सीमा गण्डकीके मानैत अछि। प्रसिद्ध मैथिल कवि चन्दा झा[6] मिथिलाक जे भौगोलिक सीमाक चर्चा कयने छथि ताहि अनुसारें पश्चिममे गण्डक सऽ पूबमे कोसीक पुरान धार अर्थात् वर्त्तमानक महानंदाक धार छल। एहि तरहेँ भौगोलिक दृष्टि सऽ गंगाक उत्तर आ गण्डक सऽ पूब मिथिला मानल गेल जखन कि महानंदा सऽ पश्चिमक क्षेत्रके सेहो एहि क्षेत्रमे मानल गेल अछि। एहि आलेखमे एहि भौगोलिक सीमान्तर्गत स्थित मिथिला क्षेत्रमे महात्मा गाँधीजी द्वारा कयल गेल परिभ्रमण, सत्याग्रह, सामाजिक सुधार, जनकल्याण कार्य प्रभृतिक रेखांकन प्रस्तुत कयल जायत।

गाँधीजीक चम्पारण सत्याग्रह मूलतः मिथिलाक सत्याग्रह छल। मुदा मैथिल समाज एहि सत्याग्रहके मिथिलाक सत्याग्रह नहि मानि एहि सत्याग्रहक श्रेय लेबय सऽ वंचित रहि गेल। एहि सत्याग्रहक सूत्रधार पं. राजकुमार शुक्लकेँ दोसर मैथिल विभूतिक श्रेणीमे नहि राखि मैथिल समाज अपन एतेक पैघ स्वतंत्रता सेनानीकेँ अवडेरि देलक। अस्तु, मिथिलाक सपूत पं. राजकुमार शुक्ल एकटा ओहन गृहस्थ छलाह जे गाँधीजीकेँ चम्पारणक कृषकक दुःखक विषयमे जनतब देलनि। गाँधीजी कहैत छथि जे ओहि सऽ पहिने ओ चम्पारणक नामो नहि सुनने छलाह।[7] हुनका ईहो नहि बुझल छलनि जे ओतय नीलक खेती सेहो होइत छैक। नीलक गोटी ओ देखने अवश्य छलाह मुदा ई चम्पारणमे बनैत अछि आऽ एहि लेल हजारो-हजार गृहस्थ लोकनिकेँ एतेक कष्ट भोग्य पड़ैत छनि तकर जनतब हुनका नहि छलनि।[8] एहि बीच काग्रेसक 28-31 दिसम्बर 1916 कऽ लखनऊ अधिवेशनमे पं. राजकुमार शुक्ल चम्पारणक निलहा किसानक समस्या पर अपन विचार रखलनि।[9] ओ गाँधीजी सऽ चम्पारणक गृहस्थक दशा देखबाक लेल आग्रह कयलनि। पहिने तऽ गाँधीजी ई कहि हुनक बात टारि देलनि जे हम बिना देखने किछु नहि कहब मुदा शुक्लजीक आग्रह देखि ब्रजकिशोर बाबू चम्पारणक विषयके महासभामे अपन वक्तव्य रखलनि आ सहानुभूति सूचक प्रस्ताव पेश भेल।

गाँधीजी लखनऊ सऽ कानपुर गेलाह तऽ ओतहु शुक्लजी पछुऔने गेलाह। गाँधीजी हुनक दुराग्रह देखि वचन देलनि जे मार्च-अप्रैलमे कलकत्ता अधिवेशनक समयमे एक-दू दिन चम्पारणक भ्रमण कयल जायत।[10] पंडितजीक संग पीर मुहम्मद मुनिस, हरबंस सहाय सेहो गेल रहथि। लखनऊ सऽ धुरि एलाक बाद 27 फरवरी कऽ पंडितजी एकटा पत्र लिखि गाँधीजी सऽ आग्रह कयलनि-[11] 'सभक दशा तऽ आहाँ नित्य सुनैत छी आब हमरो दशापर एक दिन विचार करू। अपना आँखि सऽ हमर व्यथाके देखू।' गाँधीजी एहि पत्रक उत्तर देलनि मुदा से शुक्लजीके नहि भेटलनि तेँ पुन: 16 मार्च 1917 कऽ दोसर पत्र लिखि गाँधीजीके चम्पारण अयबाक लेल देल गेल वचनके मोन पाड़लनि। गाँधीजी शुक्लजीके 3 अप्रैल 1917 कऽ तार दय कलकत्ता बजा लेलनि आ भूपेन्द्रनाथ बसुक आवास पर भेंट करबाक लेल निर्देशित कयलनि। शुक्लजी तदनुसार कलकत्ता जाय गाँधीजी सँ भेँट कयल आऽ 9 अप्रैल कऽ गाँधीजीक संग चलि दोसर दिन भोरे पटना पहुँचि गेलाह। एहि बातक सूचना बिहारक कोनो कांग्रेसीके नहि भेलनि जखन कि राजेन्द्रबाबू गाँधीजीक संगे अधिवेशनमे बैसल रहथि।[12] शुक्लजी गाँधीजीके लय सोझे राजेन्द्रबाबूक घर पर पटना अनलनि। राजेन्द्रबाबू पुरी गेल रहथि आऽ हुनक नौकर गाँधीजीके कोनो देहाती मोकील बूझि समुचित सम्मान नहि दऽ सकलाह।[13] तखन गाँधीजी मजहरूल हक ओहिठाम पहुँचि हुनक आतिथ्य स्वीकार कय साँझक रेलगाड़ी सऽ मुजफ्फरपुर विदा भेलाह। राति दस बजे गाँधीजी शुक्लजीक संग मुजफ्फरपुर पहुँचि गेलाह जतय प्रो. जे.बी. कृपलानी अपन शिष्य आऽ आन बहुत लोक सभक संग हुनक प्रतीक्षामे ठाढ़ रहथि। गाँधीजी कृपलानीजीके अपन अयबाक सूचना तार सऽ पहिने दऽ देने रहथि। उपस्थित लोकसभ गाँधीजीके स्वागत कय आरती उतारि गाड़ी सऽ प्रो. मलकानीक आवास पर लय गेलाह जतय कृपलानीजी रहैत छलाह।[14] ओ मुजफ्फरपुरक एकटा कालेजक प्रोफेसर छलाह मुदा हुनका अपन घर-द्वारि नहि छलनि तैं प्रो. मलकानीक घर ओ गाँधीजीके लय गेलाह। प्रो. मलकानी सेहो एकटा कालेजक प्रोफेसर छलाह आऽ सरकारी कालेजक घरमे गाँधीजीके रहब एकटा असाधारण घटना छल।[15]

दोसर दिन 11 अप्रैल कऽ भोरमे किछु ओकीलक मंडली गाँधीजी सऽ भेंट कयलनि जाहिमे रामनवमीबाबू गाँधीजी सऽ आग्रह कयलनि 'आहाँ जे काज करबाक लेल एतय आयल छी से एहिठाम संभव नहि। आहाँके हमरा लोकनिक ओहिठाम रहबाक चाही। गयाबाबू नामी वकील छथि। हुनका दिससऽ हम आहाँ सऽ निवेदन कय रहल छी। हमरालोकनि सरकार सऽ डेराइत अवश्य छी मुदा यथासम्भव हम सहयोग अवश्य करब। राजकुमार शुक्लकबेसी बात सत्य छनि मुदा दु:खक गप्प जे हमर अगुआ एतय नहि छथि। बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद आऽ राजेन्द्र प्रसादके हम तार दय देने छी। शीघ्रहि ओ अओताह आऽ सबटा खेरहा कहता संगहि सहयोग सेहो करताह। कृपा कय आहाँ गयाबाबू ओहिठाम चलू।'[16]

एहि आग्रहक पश्चात् गयाबाबूक ओहिठाम गाँधीजी पहुँचि गेलाह जतय हुनका बड़ बेसी आदर आऽ सम्मान भेटलनि।[17]

ब्रजकिशोरबाबू दरभंगा सऽ अयलाह आऽ पुरी सऽ राजेन्द्रबाबू। गाँधीजीके अनुभव भेलनि जे ब्रजकिशोरबाबूक व्यवहार लखनऊ बला ओकील सऽ एतय बदलल रहनि। हुनकामे बिहारीक नम्रता, सादगी, भलमनसाहत, असाधारण श्रद्धा देखि गाँधीजीक हृदय भरि गेलनि। बिहारक ओकीलसभक ब्रजकिशोरबाबूक प्रति सम्मान देखि गाँधीजीकेँ सुखद आश्चर्य भेलनि।[18] ब्रजकिशोरबाबू एहिठामक गृहस्थक व्यथा गाँधीजीकेँ सुनौलनि आ हुनका लोकनिक कचहरीमे पैरवी करबाक कथा सेहो कहलनि। संगहि ओ कहलनि जे पैरवीक बदलामे ब्रजकिशोरबाबू आऽ राजेन्द्रबाबू अपन पारिश्रमिक सेहो लैत छथि। बेसी मुकदमामे हारि होइत छनि कोनो-कोनोमे आश्वासन टा सऽ संतोष करय पड़ैत छनि।

गाँधीजीकेँ जखन एहि बातक जनतब भेलनि जे एहि ठामक बैरिस्टर लोकनिक मेहनताना दस हजार टका धरि छनि तऽ ओ सुन्न भय गेलाह। ओ कहलनि जे एहिठामक गरीब गृहस्थ मुकदमा लड़ि कऽ जीति नहि सकैत छथि। हुनका मोन सऽ डर निकालब हुनका लोकनिक रोगक असली ईलाज अछि। ओ कहलनि जे ई 'तिनकठिया' प्रथाक जाबत धरि अंत नहि हएत ओ चैन सऽ नहि बैसता, ओ मात्र दू दिनक लेल एतय आयल छलाह मुदा जतेक समय लगतैन ताहि लेल तैयार छलाह।[19]

चम्पारणमे नीलक खेत बड़ बेसी छल। सभ गृहस्थक लेल एहन विधान बनाओल गेल छल जे एक बिगहा जमीनमे कम सऽ कम तीन कट्ठामे नीलक खेती करय पड़तनि। नीलक खेती सऽ खेतक उर्वरा शक्ति घटि जाइत छलैक तैं हुनका लोकनिक लेल ई प्रथा दु:खदायी छल। पं. राजकुमार शुक्ल सेहो छोट गृहस्थ छलाह हुनका पर सेहो ई दु:ख पड़ल रहनि। मुदा हुनका मोनमे सभक नीलक दागके धो देबाक आगि जरय लागल छल[20] आऽ ताहि लेल ओ कोनो तरहक त्याग करबाक लेल कृतसंकल्पिक भेलाह।

गाँधीजी 12 अप्रैल 1917 कऽ तिरहुतक कमिश्नरकेँ पत्र द्वारा अपन आगमन आऽ उद्देश्यक सूचना देलनि जे ओ एहिठामक कृषक लोकनिक स्थितिक जाँच करय चाहैत छथि तकर उत्तरमे 13 अप्रैल कऽ कमिश्नर कहलकनि जे ओ बाहरीके जांच वा हस्तक्षेप नहि करय देताह। पुन: गाँधीजी कहलनि जे ओ बाहरी नहि तैं एहि ठामक गृहस्थक इच्छानुसार ओ हिनका लोकनिक दशाक जाँच करताह। तखन हुनका कमिश्नर आदेश कयलकनि जे ओ एतय सऽ बाहर चलि जाथि।

एहि ठामक कागज पत्र कैथी वा उर्दूमे छल जकरा पढ़यमे गाँधीजीकेँ असुविधा बूझि पड़ैत छलनि। ओ ब्रजकिशोरबाबूकेँ एहि काजक अतिरिक्त आनोकाजमे सहयोगक मांग कयलनि। ब्रजकिशोरबाबूक नेतृत्वमे ओकीललोकनि गाँधीजीकेँ सभ प्रकारक सहयोगक

वचन देलनि। कमिश्नरक व्यवहार सऽ गाँधीजीकेँ बूझि पड़लनि जे हुनक काजमे बाधा देल जयतनि आऽ तैं ओ साकांक्ष भय अपन सहयोगी लोकनिकेँ कहलनि जे हुनका कखनो जहल भय सकैत छनि तैं नीक हएत जे मोतिहारी वा बेतियाक रैयतक बीचमे हुनका पुलिस पकड़य।[21] एहि लेल मानसिक रूपेँ सभ गोटेकेँ तैयार रहबाक लेल निर्देश देलनि। सत्यक खोजक लेल तीर्थयात्री बनि गाँधीजी दृढ़तापूर्वक एतय काज करय लगलाह। 14 अप्रैल कऽ गाँधीजी पैगम्बरपुर गामक भ्रमण कयलनि।[22] ओहिठाम लोकसभ हुनका अपन व्यथा सुनेलनि जाहि सऽ दुःखी भय मुजफ्फरपुर घुरि अयला पर कहलनि जे स्वराज ताधरि संभव नहि जाधरि गामक लोकक दशामे सुधार नहि हएत।[23]

गाँधीजी तिरहुतक किसानक दशाके जांच करबाक लेल सरकारी अधिकारी लोकनिक अतिरिक्त निलहासभक सहयोग सेहो लेबय चाहैत छलाह ताहि निमित 11 अप्रैल कऽ प्लांटर्स ऐसोसिएशनक सचिव जे.एम. विल्सन सऽ सम्पर्क कयलनि। विल्सन व्यक्तिगत रूप सऽ सहयोगक वचन तऽ देलनि मुदा एसोसिएशन दिस सऽ सहयोगक लेल कोनो आश्वासन नहि देलनि।[24] निलहा आऽ सरकारक अधिकारी लोकनिक व्यवहार देखि गाँधीजीकेँ बुझयमे कनियो भाङठ नहि रहलनि जे ई लोकनि हुनका उद्देश्यमे बाधा पहुँचा शीघ्रहि जहल पठा देताह। गाँधीजी अपन सहयोगीसभकेँ कहलनि जे बूझि पड़ैछ जे हमरा लोकनिकेँ जहलक यात्रा शीघ्रहि करय पड़त तैं जल्दी मोतिहारी आऽ बेतिया चलल जाय आऽ 15 अप्रैल कऽ दरभंगाक ओकील धरणीधर प्रसाद आऽ रामनवमी प्रसादक संग मोतिहारी गेलाह जतय गोरख प्रसादक घर पर रात्रि विश्राम कयलनि।[25] गाँधीजी कहैत छथि जे गोरखबाबूक घर धर्मशाला बनि गेल।[26] मोतिहारी सऽ पाँच कि.मी. दूर अवस्थित जसौलीपट्टी गाममे एकटा किसानके निलहा द्वारा प्रताड़ित कयल गेल छल। जकर सूचना मोतिहारी गेला पर गाँधीजीकेँ भेटलनि।[27] 16 अप्रैल कऽ भोरे धरणीधरबाबू आ रामनवमीबाबूकेँ संग कय गाँधीजी हाथी पर चढ़ि जसौलीपट्टीक लेल विदा भेलाह। आधा बाट गेला पर वैशाखक दुपहरियामे ओ लोकनि चन्द्रहिया पहुँचला जाहिक्रममे अपन सहयोगी लोकनिकेँ कतोक निर्देशसभ दैत रहलाह आऽ स्त्रीगणक पर्दाप्रथाके हटेबाक लेल सेहो निर्देश दैत रहलाह। तावत पुलिस सुपरिंटेंडेंटक एकटा दारोगा साइकिल सऽ आबि गाँधीजीकेँ कहलकनि जे सुपरिंटेंडेंट साहेब सलाम कयलनि अछि। गाँधीजी बूझि गेलाह आऽ धरणीधरबाबूकेँ आगू जयबाक लेल कहि दरोगाजीक संग पहिने बैलगाड़ी सँ आ पुनः एक्का सऽ स्वयं घुरि गेलाह। गाँधीजीकेँ चम्पारण छोड़बाक लेल नोटिस देल गेल जकर जवाबमे ओ लिखलनि जे हमरा चम्पारण नहि छोड़बाक अछि, आगू बढ़बाक अछि आऽ जाँच करबाक अछि। मुदा आदेश नहि मानबाक कारणेँ दोसर दिन कचहरीमे हाजिर होयबाक लेल समन देल गेलनि।[28]

गाँधीजी राति भरि जागि कए अपन शुभचिंतकसभकेँ पत्र दय समनक विषयमे जनतब देलनि।[29] ब्रजकिशोरबाबू, राजेन्द्रबाबू एवं आओर स्वयंसेवक लोकनिकेँ मोतिहारी अयबाक निर्देश देलनि। समनक बात सौंसे पसरि गेल आऽ लोकसभ गोरखबाबूक घर पर जुटय लगलाह। 17 अप्रैलकऽ सीरामपुर जाय ओहिठामक लोकक विषयमे जनतब लेबय लेल कलक्टर सऽ अनुमति मंगलनि मुदा हुनका समन दय कहल गेल जे 18 अप्रैल कऽ 12.30 बजे मुकदमाक सुनवाई हएत ताहिमे हाजिर रही। ई बात जंगलक आगि जकाँ पसरि गेल आऽ झुंडक झुंड लोक जुटय लागल। गाँधीजीक सहयोगी लोकनि एकरा कहुना कऽ सम्हारलनि। पटना आऽ दरभंगा सऽ क्रमशः पोलक, मजहरूक हक, राजेन्द्रबाबू आ ब्रजकिशोरबाबू मोतिहारी पहुँचय लगलाह।

गाँधीजी कहैत छथि जे गंगा सऽ उत्तर हिमालयक तराईमे नेपाल लग चम्पारण अछि, मुदा पहिने एकर ओ नाम नहि सुनने छलाह। पंडित राजकुमार शुक्ल सोझ लोक छलाह हुनकामे राजनैतिक काज करबाक बेसी ऊहि नहि छलनि। चम्पारणक बाहरक दुनियाक विषयमे नहि जनैत छलाह मुदा हुनक आऽ गाँधीक मेल पुरान मित्र जकाँ जानि पड़ैत छलनि। एहि सऽ हुनका ईश्वर, अहिंसा आऽ सत्यक साक्षात्कार भेलनि।[30] एहितरहें एहि भूमि पर गाँधीजीके ईश्वर, सत्य आऽ अहिंसाक दर्शन भेलनि जकरा आधार पर ओ सदिखन आगू बढ़ैत रहलाह।

गाँधीजी कहैत छथि जे ओ दिन हुनका लेल एहन दिन छल जकरा बिसरल नहि जा सकैत छल। ई हुनका आऽ किसानक लेल उत्सवक दिन छल। गाँधीजी पर मुकदमा चलयबला छल मुदा वस्तुतः सरकारे पर मुकदमा चलाओल जा रहल छल। कमिश्नर जे जाल गाँधीजीक लेल ओछौने छल ताहिमे सरकारे फँसि गेल।[31]

गाँधीजी पर मुकदमा चलाओल गेल। मुदा सरकारी पक्षक ओकील आऽ मजिस्ट्रेटसभ घबरायल छलाह। सूझि नहि रहल छलनि जे की करी की नहि। सरकारी ओकील सुनवाई टालय चाहैत छलाह मुदा एहि बीच गाँधीजी कहलनि जे सुनवाई टालबाक कोनो आवश्यकता नहि। ओ अपन एकटा छोटा सन बयान सुना देलनि। गाँधीजी कहलनि जे सरकारक आदेशक ओ जानि बूझि कऽ अनादर नहि कयलनि। चम्पारणक गरीब रैयतक संग निलहासभ न्यायक व्यवहार नहि करैत छथि तकरे जाँच करबाक लेल आयल छथि। आऽ ई काज कयने बिना ओ घुरि आपस जायबला नहि छथि तैं सरकारक आदेशक अवहेलना कयलनि अछि आऽ तकर अपराध स्वीकार करैत दण्डक लेल तैयार छथि। ओ कहलनि जे सरकारक आज्ञाक उल्लंघन करबाक हुनकर उद्देश्य नहि छनि मुदा ओ अपन अंतरात्माक आवाजक अनुसरण कयलनि अछि तैं सरकारक कोनो दण्डकेँ स्वीकार करबाक लेल तैयार छथि।[32] आब मुकदमा टालबाक कोनो बाते नहि बाँचल छल तैं दण्ड सुनेबाक लेल मुकदमाकेँ 21 अप्रैल धरि लेल

स्थगित राखल गेल।[33] मुदा निर्णय सुनेबा सँ पहिने 20 अप्रैल 1917 कऽ गाँधीजीकेँ मजिस्ट्रेट समाद देलनि जे लाट साहेब मामिला उठा लेलनि अछि। कलक्टर पत्र देलकनि जे गाँधीजीकेँ जे जाँच करबाक छनि से जाँच करथु एहिमे सरकारी अधिकारीगण सेहो सहयोग करथिन।

गाँधीजी कहैत छथि जे सम्पूर्ण भारतकेँ पहिल बेर सत्याग्रह अथवा कानूनक सविनय भंग करबाक पाठ एतय भेटलैक जकर चर्चा सम्पूर्ण जगतमे भेलैक आऽ चम्पारणक संगहि गाँधीजीकेँ अकल्पित प्रसिद्धि भेटलनि एहितरहें मिथिलाक भूमि पर गाँधीजीक पहिल सत्याग्रह सफलतापूर्वक सम्पन्न भेल।

चम्पारणक रैयतक दशाक जाँच गाँधीजी अपन सहयोगीसभक संग प्रारंभ कयलनि। गाँधीजी कहैत छथि जे एहिठामक जाँच अहिंसा आऽ सत्यक एकटा बड़ पैघ प्रयोग छल।[34] गोरखबाबूक घर छोड़ि एकटा भाड़ाक घर लेल गेल। ओकीलसभ खर्चक ओरियान करैत छलाह। हुनक सहयोगीसभ जे नौकर–चाकरकेँ लऽकऽ आयल छलाह से सभ गाँधीजीक सादगी देखि नौकर–चाकरकेँ गाम घुराकय अपनहि अपन–अपन काज करय लगलाह। ब्रजकिशोरबाबू आऽ राजेन्द्रबाबूक जोड़ी तऽ बेजोड़ छल संगहि हुनक संगीसभ– शम्भूबाबू, अनुग्रहबाबू, धरणीधरबाबू आऽ रामनवमीबाबूसभक मुख्य काज लोकक बयान लेब छल। कृपलानीजी ओ मौलाना मजहरूल हक प्रभृतिक सहयोग सदिखन भेटैत रहैत छलनि।

21 अप्रैल 1917 सऽ रैयतसभक बयान लिखनाय प्रारंभ भेल। ओहि दिन पटना सऽ सच्चिदानंद सिन्हा आऽ रामकृष्ण सहाय सेहो पहुँचलाह। हसन इमाम आबि नहि सकलाह मुदा 1000 टकाक मदति पठौलनि। डॉ. पी.जे. मेहता रंगून सऽ आर्थिक सहायताक वचन देलनि। तैं गाँधीजीकेँ खर्चक लेल बेसी चिन्ता नहि रहैत छलनि। गाँधीजीकेँ देखबाक लेल रैयतक धरोहि लागि जाइत छल। रैयतसभक विश्वास छलनि जे हुनका लोकनिक रक्षा करबाक लेल भगवानक रूपमे गाँधीजी ठाढ़ छथि तैं ओ सभ हुनक दर्शनक लेल व्यग्र रहैत छलाह।

22 अप्रैल 1917 कऽ गाँधीजी तृतीय श्रेणीक रेलगाड़ीक बोगीमे बैसि कय साँझ धरि बेतिया पहुँचलाह जतय हजारीमल धर्मशालामे रैयतसभक गवाही लेल जयबाक छल। 23 अप्रैल कऽ बेतियाक सबडिविजनल ऑफिसर डब्ल्यू.एच. लेविस आऽ बेतिया राजक मैनेजर जे.टी. विटी सऽ भेंट कयलनि। रैयतसभक दशा देखबाक लेल गाँधीजी गामे–गाम भ्रमण करबाक लेल निकलि गेलाह एहि लेल ओ प्रचण्ड रौद आऽ गर्मीक परबाहि नहि कयलनि।

एहि क्रमे 23 अप्रैलक साँझ 5 बजे गाँधीजी पीर मुहम्मद मुनिस ओहिठाम हुनक माय सँ भेंट करबाक लेल पएरे गेलाह। मुनिसक दलान पर हजारो लोक बैसल छलाह जिनकासभ सऽ कुशल–क्षेमक बाद मुनिसक मायक दर्शन लेल गेलाह। हुनका सऽ कुशलक्षेमक किछु कालक बाद पुनः दलान पर आबि गेलाह। एतय मुनिसजीक मित्र लोकनि गाँधीजीक

अभिनंदन कयलनि जकर प्रति तत्कालीन **प्रताप** अखबारमे प्रकाशित सेहो भेल छल।[35] चम्पारणमे सभ सऽ पहिने मुनिसजीक दलान पर गाँधीजी गेल छलाह। चम्पारणक नीलक मुद्दाके उठाबएमे मुनिसजीक अपूर्व योगदान छल। **प्रताप** अखबारमे समय-समय पर कतोक बेर एहि विषय पर अपन आलेख लिखैत रहलाह जाहि कारणे हुनक नौकरी सेहो चलि गेलनि तथापि हुनक लिखब कम नहि भेल जखन कि हुनका कोनो अपन खेती-गृहस्थी नहि छलनि आऽने निलहासभ सऽ कोनो झगड़ा। हुनक माय दुखित छलीह तिनका जिज्ञासाक लेल गाँधीजी हुनक ओहिठाम गेल रहथि। हुनक दर्शनक बाद गाँधीजी पं. राजकुमार शुक्ल संग विदा भेलाह आऽ राजमहलक भ्रमण करैत शुक्लजीक सङ हुनक परिवारक सदस्यसभक जिज्ञासा करबाक लेल गेलाह। शुक्लजी निलहासभक प्रताड़ना सऽ त्रस्त भय गाम छोड़िकय परिवारक संग बेतियामे रहऽ लागल छलाह। परिवारक सदस्यसभक जिज्ञासा कय गाँधीजी एतय सऽ किस्तान पट्टी, गिरिजा आऽ रघुबाबूक घरक भ्रमण करैत धर्मशाला धुरि अयलाह गाँधीजी जाहि गली सऽ जाइत छलाह स्त्रीगणसभ फूलक वर्षा करैत छलीह, हजारो लोक गाँधीजीक जय-जयकार करैत संङ लागल रहैत छलाह।[36] 24 अप्रैल कऽ गाँधीजी बैरिया लौकरिया आदि कतोक गामसभक भ्रमण कए ओहि ठामक लोकसभक दशा अपन आँखि सऽ देखलनि।[37]

27 अप्रैल 1917 कऽ ब्रजकिशोरबाबूक संग बेलवा फैक्ट्री आ ताहि ठामक किछु गाम अयलाह। हुनक संग गोरखपुरक ओकील विन्ध्यवासिनीबाबू सेहो छलाह। एहि लेल नरकटियागंज रेलवे स्टेशन सऽ भोरे-भोरे पएरे विदा भेलाह आऽ छओ वा सात माइल चलि कऽ 10 बजे करीब मुरलीभरहवा पहुँचलाह। ई पं. राजकुमार शुक्लक गाम छल एतय सऽ बेलवा फैक्ट्रीक मैनेजर ए.सी. एम्मन सऽ भेंट कयलनि आऽ रात्रिमे बेलवामे विश्राम कय दोसर दिन 28 अप्रैल कऽ भोरे बेतियाक लेल अमोलवा होइत विदा भेलाह। मुरलीभरहवाक लोकसभ सऽ हुनक दशाक विषयमे जनतब लेलनि आऽ बाटमे एहि क्षेत्रक समस्यासभक निदान लेल सहयोगी लोकनि सऽ विमर्श कयलनि।

30 अप्रैल 1917 कऽ गाँधीजी 4 बजे भोरे बेतिया सँ ट्रेन पकड़ि 5 बजे साठी आबि साठी फैक्ट्रीक भ्रमण कय ओकर मैनेजर सी. स्टिल आऽ परसा फैक्ट्रीक मैनेजर गार्डन कनिंग सऽ भेंट कयलनि। ओ ओहिठामक रैयतसभक व्यथा सूनि साँझमे बेतियाक लेल ट्रेन पकड़ि लेलनि। साठी सऽ पहिने ओ बाटमे कटहरी गाममे बूचन दूबे ओहिठाम स्नान आऽ भोजन कयलनि।[38] ताहि सऽ पहिने 24 अप्रैल कऽ ब्रजकिशोरबाबूक संङ गाँधीजी लौकरिया गाम गेल छलाह।[39] एहि ठाम गाँधीजी एवं हुनक स्वयंसेवक द्वारा कएल जा रहल जाँच प्रक्रियाक अवलोकन करबाक लेल बेतियाक एस.डी.ओ. सेहो आयल छलाह। गाँधीजी बैरिया फैक्ट्रीक गेल सऽ सेहो भेंट कयलनि मुदा ओ सहयोग नहि कयलकनि।[40] एहिठाम श्रमिक लोकनिक

काज करबाक प्रकृति, हुनका देल जाय वाला कम बोनि, बालक आऽ स्त्रीगण द्वारा काज करबाक प्रकृतिसभक अध्ययन कयल गेल जे सभ अत्यंत अस्वस्थ्यकर स्थितिमे काज करैत छलाह।[41] 26 अप्रैल कऽ गाँधीजी कुरिया फैक्ट्रीक गाम सिंधा छपरा जयबाक क्रममे 25 अप्रैल कऽ शिवराजपुर कामौनी जाकऽ रैयतसभक बयान लेलनि।

ब्रजकिशोरबाबूक संग गाँधीजी 1 मई कऽ मोतिहारी गेलाह जतय दोसर दिन किछु निलहासभ सऽ विमर्श कयलनि। 3 मई कऽ कलक्टर, सेट्लमेंट अफसर प्रभृति कतोक आन-आन लोकसभ सऽ भेंट कय बेतिया घुरि गेलाह।[42] मोतिहारी जयबाक क्रममे ओ तुरकौलियाक ओलहाँ कोठीमे अगिलग्गीक जनतब प्राप्त कयलनि। 4 मई सऽ 8 मई धरि बेतियामे रहि अपन सहयोगी लोकनिक संग रैयतसभक बयान लेलनि आऽ तकर समीक्षा करैत रहलाह।[43] 9 मई कऽ बेतिया सऽ पटना जाय प्रांत कार्यकारिणी परिषदक सदस्य डब्ल्यू. मॉड, मॉर्सहेड, हेकॉक, लूई आऽ वीटी सऽ भेंट कयलनि।

11 मई 1917 कऽ पटना सऽ घुरि बेतिया आबि गेलाह। 12 मई कऽ रैयतसभक बयान लेलनि आऽ 13 मई कऽ चम्पारणक किसानक विषयमे बिहार आऽ उड़ीसाक मुख्य सचिव केँ प्रतिवेदन पठौलनि। 16 मई 1917 कऽ अपन सहयोगी राजेन्द्र प्रसाद, प्रो. कृपलानी, प्रभुदास, राजकुमार शुक्ल आदिक संग चारि बजे भोरमे पएरे धोकराहा कोठी आऽ शिकारपुरक लेल प्रस्थान कयलनि। जाहि क्रमे बाटक सरिसवा बाजारमे किसान सभा कयलनि।[44] 17 मई कऽ धोकराहाँ कोठीक 400-500 रैयतसभक बयान लेलनि जाहिमे खुलिकऽ रैयतसभ निलहाक प्रताड़नाक चर्चा कयलनि।[45] 20 मई कऽ कलक्टरकेँ पत्र लिखि कय बेलवा आ धोकराहा कोठी द्वारा रैयतसभकेँ डरेबाक-धमकेबाक शिकायत कयलनि। 22 मई कऽ कलक्टर हेकॉक मॉर्सहेडके पत्र लिखि कय गाँधीजीकेँ धोकराहाँ अगिलग्गीक लेल जिम्मेदार बनेलकनि। ओहिदिन गाँधीजी आऽ राजेन्द्रबाबू सतबरिया आयल छलाह।[46] 24 मई कऽ प्रभुदासक संग मोतिहारी गेलाह आऽ 25 मई सऽ 29 मई धरि मोतिहारीमे रैयतक बयान लेलनि। अनुग्रहबाबू आऽ ब्रजकिशोरबाबूक संग बेतिया आबि 31 मई कऽ रैयतसभक बयान लेलनि। एहि बीच 19 मई कऽ **मिथिला मिहिर**मे छपल जे जहिया सँ गाँधीजी चम्पारण एलाह अछि निलहा अशांत भऽ गेल अछि।[47] वायसराय गाँधीजीकेँ चम्पारण सऽ हटेबाक लेल दरभंगाक महाराज रमेश्वर सिंह सऽ विमर्श कयलनि मुदा महाराज कहलनि जे गाँधीजीकेँ हम कतोक वर्ष सँ जनैत छी ओ आन्दोलनक समर्थन नहि दऽ सकैत छथि।

एहि बीच 25 मई कऽ गाँधीजी हेकॉकके ँ पत्र दय सूचित कयलनि जे मोतिहारीक निकटस्थ गाम छतौनीक रैयतसभकेँ इरबिन द्वारा प्रताड़ित कयल गेल अछि। गाँधीजी स्वयं छतौनी जाकऽ रैयत सभक व्यथा सुनि पुनः 28 मई कऽ एच.एस. इरविनकेँ पत्र देलनि आऽ सभटा घटनाक चर्चा संगहि आनो-आनो गामक समस्याक उल्लेख कयलनि।[48] गाँधीजी रैयत

सभक समस्याक समाधान सरकारी अधिकारीसभ सऽ मिलान जुलान सऽ करबाक लेल सदिखन प्रयास करैत छलाह जकर चर्चा 21 मई कऽ लुई द्वारा मोतिहारी कलक्टरकेँ पठाओल पत्रमे स्पष्टरूपें कयल छल। तिरहुतक कमिश्नर मई 1917मे सरकारकेँ सूचित कयलनि जे गाँधीजी रैयत आऽ निलहाक बीचक संबंधक जाँच कय रहल छथि जाहिमे ब्रजकिशोर प्रसाद, राजेन्द्र प्रसाद, कृपलानी, रामनवमी प्रसाद, अनुग्रह नारायण सिंह, विन्ध्यवासिनी प्रसाद, धरणीधर प्रसाद, शिवनंदन राम, गोरख प्रसाद, पीर मुहम्मद मुनिस, राजकुमार शुक्ल आदि सहायता कय रहल छथि।[49]

गाँधीजीक कार्यकलाप सऽ डेराकऽ यूरोपीयन डिफेन्स एसोसिएशनक मुजफ्फरपुर ब्रांच अपन मुख्यालयके सूचना देबाक लेल निर्णय कयलक जे गाँधीजीक कार्यकलाप सऽ शांति भंग भय रहल अछि आऽ अपराध बढ़ि रहल अछि। तैं गाँधीजीकेँ चम्पारण सऽ बाहर करबाक लेल प्रयास कयल जाय। तथापि सरकारक एहि पूर्वाग्रह सऽ प्रभावित बिना भेने बिहार एवं उड़ीसाक मुख्य सचिव द्वारा गाँधीजीकेँ 4 जून 1917 कऽ लेफ्टीनेंट गवर्नर एडवार्ड गेटक संग बैसार करबाक लेल आमंत्रण देल गेलनि। जकरा स्वीकार करैत 27 मई कऽ गाँधीजी विस्तार सऽ एहिठामक रैयतसभक समस्याक चर्चा संग मुख्य सचिवके पत्र देलनि।

राँची बैसारक आमंत्रण पर गाँधीजीक सहयोगी लोकनि साकांक्ष भय गेलाह जे जऽ गाँधीजीकेँ रोकि लेतनि तऽ आगू की करबाक चाही। एहि प्रकारक शंकाक कारणें गाँधीजी अपन स्त्रीकेँ तार दय कलकत्ता सँ राँची अयबाक लेल कहलनि आऽ छोटका पुत्र देवदास गाँधीकेँ सेहो साबरमती सत्याग्रह आश्रम सऽ राँची बजौलनि। पंडित मदन मोहन मालवीयजी तार पाबि 1 जून कऽ पटना एलाह आऽ राजेन्द्रबाबू सेहो पटनामे रहथि। 2 जून कऽ गाँधीजी ब्रजकिशोरबाबूक संग सेहो पटना पहुँचि निर्णय लेलनि जे जँ सरकार हुनका विरुद्ध कोनो कार्रवाई करत तऽ मालवीयजी आऽ मजहरूल हक चम्पारणक कार्यकर्त्ता लोकनिक नेतृत्व करताह। ओहि दिन ब्रजकिशोरबाबूक संग राँची विदा भेलाह आऽ पंडित मालवीयजी इलाहाबाद घुरि गेलाह। राँचीमे लेफ्टीनेंट गवर्नर आऽ एक्सक्यूटिव कौंसिलक सदस्य लोकनिक संग गाँधीजीक तीन दिन धरि बैसार भेल जकर परिणामस्वरूप चम्पारणक किसानक दशाक जांच लेल एकटा जांच समितिक गठन भेल आऽ गाँधीजी ओकर सदस्य बनबा लेल तैयार भय गेलाह।[50] 7 जून 1917 कऽ गाँधीजी पटना घुरि अयलाह संगहि ब्रजकिशोरबाबू, कस्तूरबा गाँधी आऽ देवदास गाँधी सेहो आबि गेलाह। 8 जून कऽ मालवीयजी एवम् दोसर मित्रसभ सऽ विमर्श कऽ बेतिया घुरि अयलाह।

जाँच समितिमे एफ.जी. स्ली, जे सेंट्रल प्रोविन्सक कमिश्नर छलाहकेँ अध्यक्ष बनाओल गेल, राजा हरिहर प्रसाद सिंह आऽ डी.जे. रीड, सदस्य, बिहार एंड उड़ीसा लेजिस्लेटिव

कौंसिल, आऽ जी. रैनी, डिप्युटी सेक्रेट्री, फाइनेंस डिपार्टमेंट गवर्नमेंट ऑफ इंडियाकेँ राखल गेल मुदा हरिहर प्रसाद सिंह अस्वस्थ्यताक कारणेँ अस्वीकार कय देलनि तऽ हुनक स्थान पर बनैली राजा कृत्यानंद सिंह, सदस्य बिहार एण्ड उड़ीसा लेजिस्लेटिव कौंसिलकेँ राखल गेलनि।[51]

गाँधीजी 4 जून 1917 कऽ राँची सऽ एकटा पत्र दरभंगा महाराज रमेश्वर सिंहकेँ लिखलनि जाहिमे तिनकठिया प्रथा, ओकर समस्या, किसानक दशा, सरकारक क्रिया-कलाप प्रभृतिक विस्तार सऽ चर्चा कयलनि। संगहि चीफसेक्रेट्री बांकीपुरकेँ सेहो एकटा तार दय जाँच समितिक विषयमे सूचित कयलनि।[52]

जाँच समितिक नियुक्तिक बाद गाँधीजीक सहयोगी द्वारा रैयतक बयान लेब बंद कय देल गेल मुदा तावत धरि 8000 रैयतक बयान दर्ज भय गेल छल। एहि निर्णयक सूचना गाँधीजी 13 जून कऽ बेतिया सऽ एकटा पत्र दय चीफसेक्रेट्री एच. मैम्फर्सनकेँ पठा देलनि।[53] एहि पत्रमे ओ ईहो उल्लेख कयलनि जे जुलाई सऽ ई कमिटी काज करत आऽ ओ अपन सहयोगीक संग अपन मुख्यालय मोतिहारीमे रखताह संगहि ओ ताबत धरि अहमदाबाद नहि जेताह जावत धरि जाँच समितिक रिपोर्ट प्रकाशित नहि हएत।[54]

एहि बीच 16 जून कऽ गाँधीजी बम्बई गेलाह आऽ 29 जून कऽ सर्वे ऑफ इंडिया सोसाइटीक सचिव डॉ. एच.एस. देवक संग मोतिहारी एलाह। गाँधीजी, राजेन्द्रबाबू, कृपलानीजी, ब्रजकिशोरबाबूक संग 5 जुलाई कऽ विमर्श कय मोतिहारी सऽ पटना गेलाह[55] आऽ मालवीयजी 6 जुलाई कऽ गाँधीजी सऽ भेंट कयलनि। 11 जुलाई कऽ राँचीमे जाँच समितिक बैसारमे भाग लय 12 जुलाई कऽ बेतिया घुरि अयलाह आऽ फेर 13 जुलाई कऽ मोतिहारी गेलाह।[56] 14 जुलाईके रातिमे ट्रेन पकड़ि 15 कऽ भोरे बेतिया एलाह जतय 17 जुलाई कऽ जाँच समितिक पहिल बैसार बेतियामे भेल।[57] अगस्तक मध्य धरि रैयत सभक दशाक जाँच भेल आऽ 17 अगस्त कऽ गाँधीजी पटना सऽ अहमदाबाद चलि गेलाह। मुदा ताहि सऽ पहिने 29 जुलाई कऽ गाँधीजी तिनकठिया प्रथा समाप्त करबाक लेल अपन मंतव्य प्रस्तुत कऽ देलनि।

जाँचसमितिक बैसारक सूचना अखबारसभमे प्रकाशित कयल गेल जाहि सऽ दस हजार सऽ बेसी गृहस्थ आऽ रैयतसभ हजारीमल धर्मशालाक समक्ष अपन बयान दर्ज करेबाक लेल उपस्थित भेल छलाह। एकर रिपोर्टिंग लेल देशभरिक पत्रकारसभ आयल छलाह। 18 जुलाई 1917 कऽ गाँधीजी, राजेन्द्रबाबू, प्रो. कृपलानी, डा. देव, राजकुमार शुक्ल आऽ देवदास गाँधी समितिमे उपस्थित भेलाह जाहिमे बेतिया राजक मैनेजर मि. विटी तथा बेतियाक मि. लेविसक बयान ओ जिरह भेल। 19 जुलाई 1917 कऽ खेन्हर राय, संत राउत, पं. राजकुमार शुक्लक बयान भेल हिनका सभक संग बाबू कृत्यानंद सिंह जिरहमे गाँधीजी मि. स्ली, मि. रैनी आऽ

मि. मॉड भाग लेलनि। 20 सऽ 22 जुलाई धरि बेतियामे गवाहीमे भाग लैत रहला। 23 जुलाई कऽ समितिमे बेलवा कोठीक ए.सी. एम्मन आऽ साठी कोठीक मैनेजर एल. स्टॉलक बयान लेल गेल। 23 जुलाई कऽ साँझमे गाँधीजी मोतिहारी एलाह।[58] 25 जुलाई 1917 कऽ मोतिहारी जिला परिषद कार्यालयमे जाँच समितिक बैसारमे गाँधीजीक समक्ष डब्ल्यू.बी. हेकॉक आऽ राजपुर कोठीक ई.ए. हडसन द्वारा बयान देल गेल। 26 जुलाई 1917 कऽ मोतिहारी फैक्ट्रीक मैनेजर डब्ल्यू.एस. इरविन बयान देलनि आऽ गाँधीजी अपन स्त्री कस्तूरबा, राजेन्द्रबाबू, कृपलानीजी आदि संग बेतिया गेलाह। 27 जुलाई कऽ गाँधीजी अपन कार्यकर्त्ता राजेन्द्रबाबू, विन्ध्यवासिनीबाबू, रामनवमीबाबू, रामबहादुरबाबू, संत राउत, राजकुमार शुक्ल[59]सभ सऽ विमर्श कयलनि। 28 जुलाई कऽ समितिक सदस्यसभक संग परसा कोठी गेलाह आऽ 29 जुलाई सऽ कुड़िया कोठीमे बयान लय सिंधा छपरा आऽ लाल गढ़क भ्रमण कयलनि।[60] 30 जुलाई कऽ गाँधीजी आऽ मि. मॉड मलहिया जाकऽ जाँच कयलनि। 31जुलाई कऽ वोकाही, धोकराहाँ आऽ लोहिअरिया कोठी जाकऽ जाँच कयलनि आऽ तकर बाद 1 अगस्त कऽ मोतिहारी गेलाह संगमे देवदास, राजेन्द्र प्रसाद, धरणीधरबाबू, डॉ. देव, संत राउत, राजकुमार शुक्ल, प्रभु दास सिंह रहथि। 2 अगस्त कऽ गाँधीजी समितिक सदस्यसभक संग राजपुर कोठी गेलाह जतय 6 हजार सऽ बेसी कृषक उपस्थित भेलाह। 3 अगस्त कऽ पिपराकोठीक गृहस्थक बयान लेलनि। 4 अगस्त कऽ तुरकौलिया आऽ ओलहा कोठीमे कृषक लोकनिक बयान लेल गेल एतय 5 हजार सऽ बेसी गृहस्थ जमा रहथि। तुरकौलिया कोठीक सोझाँमे नीमक गाछ देखलनि जाहि ठाम रैयतसभकेँ पकड़िकऽ निलहासभ मार-पीठ करैत छल। 5 अगस्त कऽ मोतिहारी सऽ राजपुर छतौनी जाँच करबाक लेल गेलाह आऽ ओतय सऽ घुरि आबि तीन बजेक गाड़ी सऽ ब्रजकिशोरबाबू, रामबहादुरबाबू आऽ राजेन्द्रबाबूक संग बेतिया चलि गेलाह। 6 अगस्त कऽ गाँधीजी समितिक संग हरदिया कोठी आऽ राजघाट जाँच करबाक लेल गेलाह आऽ 7 सऽ 9 अगस्त धरि बेतियामे रैयतसभक बयान लेलनि। आऽ रातिमे सभ गोटे मोतिहारी अयलाह।[61]

10 अगस्त कऽ जाँच समिति तिनकठिया प्रथा समाप्त करबाक निर्णय लेलक। 11, 12, आऽ 13 अगस्त कऽ बेतियामे रैयतसभक बयान लेल गेल। 14 अगस्त कऽ कमीशनक बैसार भेल। 15 अगस्त कऽ गाँधीजी द्वारा पिपरा कोठी, तुरकौलिया कोठी आऽ मोतिहारीक इरविनकेँ रैयतसभ पर अत्याचार नहि करबाक सलाह देल गेल। 16 अगस्त 1917 कऽ बेतिया मोतिहारीमे सेवा कार्य चालू रखबाक लेल सहयोगी लोकनिकेँ निर्देशित करैत गाँधीजी अहमदाबाद चलि गेलाह।[62]

22 सितम्बर 1917 कऽ गाँधीजी अहमदाबाद सऽ राँची एलाह मुदा दुखित पड़ि गेलाह तथापि जाँच समितिक प्रतिवेदन तैयार करैत रहलाह। ब्रजकिशोरबाबू सेहो राँची गेलाह। 24

सऽ 28 सितम्बर धरि जाँच समितिक अंतिम बैसारमे भाग लैत रहलाह। 3 अक्टूबर कऽ जाँच रिपोर्ट तैयार भेल जाहि पर गाँधीजी अन्य सदस्यक संग हस्ताक्षर कयलनि। 4 अक्टूबर 1917 कऽ जाँच रिपोर्ट सरकारकेँ समर्पित कयल गेल आऽ रिपोर्ट पर सरकारक निर्णयके सभ क्षेत्रीय भाषामे प्रकाशित करबाक लेल गाँधीजी माँग कयलनि। 5 अक्टूबर 1917 कऽ चम्पारण जाँच समितिक रिपोर्टकेँ लेफ्टीनेंट गवर्नर स्वीकार कय लेलनि। 7 अक्टूबर 1917 कऽ गाँधीजी बेतिया एलाह आऽ गोशालाक नेञो रखलनि आऽ 12 अक्टूबर धरि एतय रहलाह। 18 अक्टूबर 1917 कऽ सरकार जाँच समितिक निर्णयके मंजूर करैत अपन मंतव्य प्रकाशित कयलक[63] आऽ गाँधीजीक जय जयकार चम्पारणमे होमय लागल।

चम्पारण भ्रमणक क्रममे गाँधीजीकेँ अनुभव भेलनि जे एहिठाम जऽ असली काज करबाक हो तऽ सभ सऽ पहिने गामसभमे शिक्षाक प्रवेश आवश्यक अछि।[64] लोकक ज्ञान दयनीय छल। गामक बच्चासभ बौआइत रहैत छल। ओकर माय-बाप 2-3 पाइ लेल नीलक खेतमे ओकरा सऽ मजदूरी करबैत छल। गाँधीजी सहयोगी लोकनिक सलाह सँ 6 टा गाममे विद्यालय खोलबाक नेयार कयलनि।[65] शर्त ई छल जे ओहि गामक प्रधान लोकनि मकान आऽ शिक्षकक भोजनक खर्चक व्यवस्था करथि। बाँकी खर्च गाँधीजी करथि। गाममे पाइक तऽ अभाव छल मुदा किछु अन्न देबाक लेल लोक तैयार भय गेलाह।[66] आब शिक्षकक लेल खोज प्रारंभ भेल। गंगाधर राव देशपांडे द्वारा बाबा साहब सोमण आऽ पुंडलीककेँ पठाओल गेल। बम्बई सऽ अवन्तिका बाई गोखले एलीह। दक्षिण सऽ आनंदी बाई एलीह। छोटेलाल, सुरेन्द्रनाथ आऽ गाँधीजी अपन छोट बालक देवदासके बजौलनि। तावत महादेव देसाई आऽ नरहरि परीख आबि गेलाह। फेर महादेव देसाईक स्त्री दुर्गाबहन आऽ नरहरिक स्त्री मणि बहन एलीह। कस्तूरबाकेँ सेहो बजाओल गेल। अवंतिका बाई आऽ आनंदीबाई तऽ शिक्षिता मानल जा सकैत छलीह मुदा मणि बहन, परीख आऽ दुर्गा बहनके मात्र किछु गुजराती अबैत छलनि। गाँधीजी कहैत छथि कस्तूरबाईक पढ़ाई तऽ नहिके बराबर छल। एहना स्थितिमे ई बहिनसभ बच्चाके हिन्दी कोना पढ़ौती?[67] गाँधीजी शिक्षिका लोकनिके आदेश देलनि जे बच्चासभकेँ व्याकरण नहि अपितु रहन-सहन आऽ साफ-सफाईक ज्ञान आवश्यक छैक। गाम-सभमे गंदगीक पराकाष्ठा छल। गलीसभमे कूड़ा, इनारक चारू कात कादो आऽ दुर्गन्ध, अंगना दिस देखय जोगरक नहि। पैघसभके स्वच्छताक शिक्षा आवश्यक छल। चम्पारणक लोक रोगसभ सऽ पीड़ित छल। एहि काज लेल डाक्टरक आवश्यकता छल तैं गाँधीजी गोखले साहेबक सोसाइटी सऽ डा. हरिकृष्ण देवकेँ मंगौलनि आऽ हुनक देखरेखमे शिक्षक-शिक्षिका लोकनि काज करय लगलीह।[68]

चम्पारणक दुर्दशाक निवारण हेतु शिक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वच्छताक व्यवस्थाक निमित्त पाठशाला खोलय लेल गाँधीजी सभ सऽ पहिने 8 नवम्बर 1917 कऽ कस्तूरबा गाँधीक संग

मोतिहारी पहुँचलाह आऽ 9 नवम्बर कऽ कलक्टर जे.एल. मेरीमेन सऽ भेंट कयलनि। 14 नवम्बर 1917 कऽ गाँधीजी ढाकाक समीप बड़हरबा लखनसेनमे प्रथम पाठशाला स्थापित कयलनि। एहि गामक शिव गुलाम लाल नामक व्यक्ति सँ एहि निमित्त घर प्राप्त कय चम्पारणमे शैक्षणिक आंदोलनक सूत्रपात कयलनि।[69] शिक्षणकार्यक लेल बबन गोपाल गोखले आऽ हुनक स्त्री अवन्तिकाबाई गोखले, देवदास गाँधी, साबरमती आश्रमक छोटेलाल आऽ सुंदरजीकेँ बजाओल गेल। एहि पाठशालामे 140 बच्चाके गोखले सऽ आऽ 40 बच्चा ओ स्त्रीगणके हुनक स्त्री सऽ शिक्षा भेटय लागल। दूनू गोटे बच्चासभके पढ़ेनाइके अलावा कपड़ा बुनबाक प्रशिक्षण दैत छलाह संगहि गामक सड़क, इनार, नालीसभकेँ साफ करैत छलाह जकरा प्रेरणा सऽ गामक आन लोकसभ सेहो स्वच्छता पर ध्यान देबय लगलाह।

गाँधीजी द्वारा दोसर पाठशालाक स्थापना 20 नवम्बर 1917 कऽ बेतिया सऽ प्राय: 58 कि.मी. पश्चिमोत्तरमे भितिहरवा मठक निकट भेल। ई पाठशाला बेलबा फैक्ट्रीक समीप छल। पं. राजकुमार शुक्लक प्रयास सऽ गामक मठक महन्थ रामजानकी दासक जमीन पर बाँस आऽ खढ़ सऽ घर बनाय पाठशाला आरंभ भेल।[70] बेलगांवक ओकील एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता सदाशिव सोमन एकर प्रभारी बनाओल गेलाह। बाल कृष्ण योगेश्वर पुरोहित आऽ कस्तूरबाके हिनक सहायताक लेल पठाओल गेल।[71] डॉ. हरिकृष्ण देव एहि ठामक चिकित्सीय प्रभारी बनाओल गेलाह जे अपन सहयोगीसभक संग ग्रामीणसभमे दवाई वितरित करैत छलाह संगहि हुनकासभके अपन स्वास्थ्यक लेल स्वच्छताक प्रति जागरूक करैत छलाह। अपन घर, गामक नाली, बाट, इनारसभके साफ करबाक प्रशिक्षण दैत छलाह। एक राति पाठशालामे आगि लगा देल गेल। कहल गेल जे बेलबा कोठीक मैनेजर ए.सी. एम्मन लगबौलक। ओहि राति देव, सोमन, अप्पाजी आऽ कस्तूरबा उपस्थित रहथि। ओ सभ निश्चय कयलनि जे खढ़क घरक स्थान पर पजेबाक घर बनाओल जाय आऽ अपन माथ पर पजेबा ऊघिकय पाठशाला लेल घरक निर्माण कयलनि।[72] ओ घर एखनहु धरि ठाढ़ अछि। एहिठाम गाँधीजीकेँ सहयोग देनिहारमे गोरखप्रसाद, जनकधारी प्रसाद, महादेव देसाई, हरवंस सहाय, जगन्नाथ प्रसाद आऽ अवधेश प्रसाद प्रमुख छलाह। एहिठामक पाठशालामे 40 सऽ बेसी छात्र-छात्रा नहि भय सकल कारण एहि ठामक जलवायु नीक नहि छल। ई पाठशाला बादमे गाँधी स्मारक संग्रहालय, भितिहरवाक नाम सऽ राज्य सरकार द्वारा अधिग्रहण कय लेल गेल। वर्तमान समयमे एहि संग्रहालयक प्रभारी एहि आलेखक लेखक छथि।

तेसर विद्यालयक स्थापना 17 जनवरी 1918 ई. कऽ मधुबनमे सेठ घनश्याम दासक भवनमे गाँधीजी कयलनि[73] जाहिमे गुजरात सऽ नरहरि द्वारका दास परीख आऽ हुनक स्त्री मनी बाई परीख, महादेव हरिभाई देसाई आऽ हुनक स्त्री दुर्गा बाईके शिक्षणकार्यमे लगाओल गेल। किछु समयक लेल विष्णु सीताराम रणदिवे उर्फ अप्पाजी आऽ जे.बी. कृपलानी सेहो

काज कयलनि।[74] पूनाक महिला आश्रमक रजिस्ट्रार दिवाकरजीक बहिन आनंदीबाई पाठशालाक कार्यभार सम्हारलनि। गाँधीजी एकटा कन्या विद्यालय सेहो स्थापित कयलनि जतय आनंदीबाई द्वारा चालिसटा बालिकाके शिक्षाक संग-संग कपड़ा बुनाई आऽ साफ-सफाईक लेल प्रशिक्षण देल जाइत छल। बादमे धरणीधर प्रसादक स्त्री, ब्रजलाल भीमजी रूपाणी, प्राणलाल, प्रभुराम योगी, रामरक्षा ब्रह्मचारी, श्यामदेव सहाय, ब्रज बिहारी शर्मा, विभीषण कुँवर, हरवंस सहाय प्रभृतिक सहयोग सेहो मुधबनक पाठशालाके भेटैत रहल।[75]

एहि तरहेँ कुल तीनटा पाठशालाक स्थापना कय गाँधीजी एहिठामक लोकक दुर्दशाक जे तीनटा मूल कारण छल अशिक्षा, अस्वच्छता आऽ रोग ताहि पर प्रहार कयलनि। गाँधीजी अपन आत्मकथामे कहैत छथि जे[76] प्रत्येक पाठशालामे एकटा पुरुष आऽ एकटा स्त्रीकेँ रखबाक व्यवस्था कयल गेल। स्त्रीगणक माध्यम सऽ स्त्रीगण वर्गमे प्रवेश करबाक छलनि। दवाईके आसान बना लेल गेल छल। अंडीक तेल, कुनैन आऽ एकटा मलहम सभ पाठशालामे राखल जाइत छल। जीह देखला पर मैल देखल जाय आऽ कब्जक शिकायत हो तऽ अंडीक तेल पिया देल जाइत छल जऽर लगैक तऽ अंडीक तेल देलाक बाद कुनैन पिया देल जाइत छल आऽ जऽ फँसुरी वा घाव होइक तऽ धोकय मलहम लगा देल जाइत छल। जऽ गंभीर बीमारी बुझना जाइन तऽ डा. देव सऽ देखेबाक लेल छोड़ि देल जाइक। डा. देव समय-समय पर सभठाम जाइत रहैत छलाह। सफाईक काज कठिन छल। लोक गंदगी साफ करबाक लेल तैयार नहि। जे सभ खेतमे जऽनक काज करैत छलाह सेहोसभ गूंह-मूत साफ करबाक लेल तैयार नहि। मुदा डॉ. देव अपने सऽ स्वयंसेवक लोकनिक संग एकटा गामक बाट साफ कयलनि, लोकक अंगना सँ कूड़ा निकाललनि, इनारक, चारूकातक खाधिसभके भरलनि, कादो निकाललनि आऽ गामक लोकसभकेँ एहि काजमे सहयोगक लेल बुझबैत रहलाह। ई देखि कतोक ठामक लोकसभकेँ लाज होइत छलनि आऽ तखन ओहोसभ एहि काजके बढ़बय लगलाह।[77]

गाँधीजी चम्पारणक एकटा गाम भितिहरवाक स्त्रीगणक दुर्दशा देखि कहैत छथि जे ततेक मैल चिकाठि नूआ पहिरने देखलनि जे ओ कस्तूरबाकेँ ओकरासभके बुझबय लेल निर्देशित कयलनि मुदा जखन कस्तूरबा एकटा स्त्रीके पुछलनि जे आहाँ एतेक मैल नूआ किएक पहिरने छी? तऽ ओ स्त्री अपना घर लऽ जाकऽ कहलकनि 'देखू हमरा घरमे कोनो पेटी-बाकस वा संदुक नहि जाहिमे हम नूआ रखने होइ। एकेटा नूआ अछि तऽ कोना एकरा साफ करी आऽ स्नान करी?' ओ ईहो कहलकनि 'महात्माजीकेँ कहियनु जे हमरा दोसर नूआ दिया देताह तऽ हम सभदिन स्नान करब आऽ नूआ साफ राखब।' ई सूनि कस्तूरबा गुम्म परि गेलीह आऽ गाँधीजीकेँ सुनौलनि।[78] कहल जाइत अछि जे गाँधीजी एतेक दुखी भेलाह जे दोसर दिन सऽ अपने मात्र डाँड़ सऽ नीचाँ धोतिए टा पहिरि कय रहय लगलाह।

गाँधीजीक चम्पारणक सत्याग्रहक परिणामस्वरूप 29 नवंबर 1917 कऽ बिहार विधान परिषद्‌मे चम्पारण एग्रेरियन बिल पेश भेल जे 18 मार्च 1918 कऽ पारित कऽ देल गेल। एहि सऽ किसानक किछु समस्याक समाधान भय सकल आऽ गाँधीजीक सत्य आऽ अहिंसाक प्रयोगक पहिल बेर जीत भेल। फरवरी 1918 ई.मे गाँधीजी अहमदाबाद चलि गेलाह जाहि सऽ एहि ठामक हुनका द्वारा प्रारंभ कएल सृजनात्मक कार्यकलाप शिथिल पड़ि गेल। तथापि हुनक संपर्क एहिठामक सहयोगी लोकनि सऽ बनल रहलनि।

गाँधीजीक मिथिलाक दोसर परिभ्रमण दिसम्बर 1920 ई.मे भेल। दिसंबर 1920कऽ गाँधीजी मौलाना शौकत अली आऽ मौलाना अबुल कलाम आजादक संग पटना अएलाह आऽ मजहरूल हकक ओहिठाम रहलाह। 6 दिसम्बर 1920 कऽ गाँधीजी छपरा गेलाह जतय 2000 लोकक सभाकेँ सम्बोधित कयलनि। ओतय सऽ गाँधीजी अपन स्त्री कस्तूरबा गाँधी, मौलाना शौकत अली आऽ मजहरूल हकक संग 7 दिसम्बर 1920 कऽ ट्रेन सऽ प्रस्थान कय हाजीपुर अयलाह जतय किछु समय बिलमि नेशनल स्कूलक स्थापना कयलनि।[79] एहिठाम खिलाफत आश्रमक स्थापनाक लेल नेञो रखलनि।[80] दुपहरिया कऽ मुजफ्फरपुर पहुँचलाह जतय हुनक स्वागतमे विशाल भीड़ ठाढ़ छल जे फूलक माला सऽ हुनका लादि देलक। अपन दलक संग ओ मौलवी मोहम्मद शफी ओहिठाम रहलाह आऽ साढ़े पाँच बजे साँझमे तिलक मेमोरियल ग्राउंडमे एकटा सभाके सम्बोधित करैत हिन्दू-मुस्लिम एकता, क्रोध पर संयम, अहिंसा, असहयोग प्रभृति विषयपर जोर देलनि। एहि सभामे 6000 लोक भाग लेने रहथि। ओ मौलवी शफीक आवास पर एकटा स्त्रीगणक सभाके सेहो सम्बोधित कयलनि। अपना दलक संग गाँधीजी बाबू गया प्रसाद सिंहक घर पर सेहो गेलाह जतय किछु काल धरि रामायणक कीर्तन सुनलनि। दोसर दिन भोरे चारि बजे बेतिया लेल ट्रेन पकड़ि लेलनि 8 दिसम्बर कऽ गाँधीजी बेतियाक गोरक्षिणीमे एकटा सभाके सम्बोधित कयलनि। 9 दिसम्बर 1929कऽ गाँधीजी बेतिया सऽ दरभंगाक लेल कार सऽ प्रस्थान कय ब्रजकिशोरबाबूक ओहिठाम आबि रात्रि विश्राम कयलनि।[81] दोसर दिन 10 दिसम्बर कऽ सात बजे भोरमे ब्रजकिशोरबाबूक आवास पर प्रायः एक हजार लोक गाँधीजीक दर्शनक लेल पहुँचलाह। बंदे मातरम, महात्मा गाँधीक जय आऽ अल्लाह हो अकबरक नारा लगैत रहल। सरकारी पदाधिकारीगणमे मुख्यतः सदर एसडीओ बाबू जमुना प्रसाद, डिप्टी मजिस्ट्रेट लाला रामेश्वर प्रसाद, सब-डिप्टी मजिस्ट्रेट मौलवी मोहम्मद सादिक, डिप्टी मजिस्ट्रेट राय किशुन बहादुर एवं मौलवी अबुल जातव मुन्सिफ प्रमुख छलाह। रामधारी प्रसाद, रामकृष्ण झा, धरणीधर प्रसाद, ब्रह्मदेव नारायण सिंह, हरबंस सहाय, ब्रह्मदेव नारायण लाल, पंडित भुवनेश्वर मिश्र, लछमन प्रसाद, हेमचन्द्र घटक (ओकील) ज्योतिष चन्द्र बोस, सुखदेव दास एवं सुखदेव प्रसाद (मुख्तार) आऽ बाबू

अदित प्रसाद सिन्हा, दरभंगा महाराजक सब मैनेजर गाँधीजी सऽ भेंट करयबलामे प्रमुख रहथि।[82]

दरभंगाक बेता मैदानमे गाँधीजीक जनसभा भेल छलनि जकर अध्यक्षता बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद कयलनि। एहिमे कस्तूरबा गाँधी, मौलाना शौकत अली, हसन आरजू, मनोरंजनक अलावा दस हजार लोक उपस्थित भेल छलाह। गाँधीजीक सहयोगी छात्र मनोरंजन द्वारा–

सुन्दर सुघर भूमि भारत राज रहे आज उहो भइल

मसान से फिरंगिया...

अन, धन, जन, बल, बुद्धि सब नास भइल...

एहि भोजपुरी राष्ट्रीय गान सऽ सभा प्रारंभ भेल। मोहम्मद जलील नामक ओकील द्वारा सभाक अध्यक्षताक लेल ब्रजकिशोरबाबूक नामक प्रस्ताव कयल गेल जकर समर्थन बाबू भुवनेश्वरी प्रसाद नामक ओकील द्वारा भेल। सभाक आरंभमे ब्रजकिशोरबाबू श्रोता लोकनि केँ सम्बोधित करैत कहलनि जे दासताक कारणें भारतक लोकक अवस्था पतनोन्मुख भऽ गेल अछि जाहि सऽ उबारबाक लेल दूटा भद्रपुरुष गाँधीजी आऽ मौलाना शौकत अली आयल छथि हिनक कहल मार्गक अनुशरण कय देशके स्वतंत्र कयल जा सकैछ। तदुपरांत गाँधीजी अपन उद्‌बोधनमे सभ सऽ पहिने कहलनि 'जखन चम्पारणमे ब्रजकिशोरबाबू दरभंगाक लेल आग्रह कयने रहथि ताहि समय सऽ एहिठामक लोक आऽ स्थानके देखबाक इच्छा प्रबल छल। मुदा भगवानक इच्छा सऽ एखन आबि सकलहुँ।'[83]

एहिठाम गाँधीजी मुख्यत: तीन टा बात पर बेसी जोर देलनि–भारतक दासत्व सऽ मुक्ति, इस्लाम धर्मके खतरा सऽ रक्षा आऽ सुराज प्राप्त करबाक लेल समुचित मार्गक अनुगमन करब। पंजाबमे जे निर्दयतापूर्वक दमन अंग्रेज द्वारा कयल गेल आऽ मुसलमानके जे धोखा देल गेल तकर निंदा करैत गाँधी कहलनि 'इस्लाम को बड़ा भाड़ी दगा दिया गया है पंजाबमे इतना घोर हत्या किया है।' गाँधीजी कहलनि जे तुलसीदास, गीता आऽ कुरानमे स्पष्ट कहल गेल अछि जे देवता आऽ राक्षस, राम आऽ रावण, ईश्वर आऽ शैतान, धर्म आऽ अधर्मक बीच सदिखन झगड़ा चलैत रहल। भारतमे एखन राक्षसक राज अछि एकरा नाश करबाक लेल हिन्दू आऽ मुसलमानके मीलि कय संघर्ष करय पड़त। सरकारक राक्षसी प्रवृतिक विरोधक लेल असहयोग करबाक आह्वान कयलनि आऽ कहलनि जे एहिठामक ब्राह्मण आऽ रूढ़िवादी हिन्दू लोकनि मुसलमान सऽ घृणा छोड़ि प्रेमपूर्वक व्यवहार करथि आऽ भाय जकाँ व्यवहार करथि तखनहि गोहत्याके रोकबामे सफलता पाबि सकैत छथि। स्वदेशी आंदोलनक वास्ते प्रत्येक परिवारमे चर्खा चलेबाक निर्देशक संग शिक्षा व्यवस्था लेल पटनामे नेशनल स्कूल आऽ कालेजक स्थपनाक चर्चा सेहो कयलनि।

गाँधीजी सुराजक लेल हिन्दू-मुस्लिम एकता, शिक्षा, ज्ञान आदिक विस्तार सँ चर्चा करैत कहलनि जे भारतमे ऋषि-मुनि द्वारा बुद्धि सऽ राक्षसक सत्ताक अंत होइत छल। गाँधीजी अंग्रेजी शिक्षा विरोधक लेल सेहो अभिभावक लोकनि सऽ आग्रह कयलनि। गाँधीजीक पश्चात् मौलाना शौकत अली हिन्दू-मुस्लिमक बीच जे घृणा छैक तकरा समाप्त करबाक आग्रह करैत कहलनि जे दूनू समुदाय मीलि कऽ शैतानक राजके समाप्त करी। ओ मुसलमान सभ सऽ आग्रह कयलनि जे हिन्दू भाई लोकनिक भावनाके सम्मान करैत गोहत्या बंद करथि। ओ ईहो कहलनि जे **सुराजक बाद सभ सऽ पहिने गोहत्या बंद करबाक लेल हम कानून बनायब।** ओ कहलनि जे गायक बदलामे हिन्दू भाई जकाँ बकरीक बलि देल जाय जाहि सऽ भाइचारा बनल रहए। ओ हिन्दू आऽ मुसलमान सऽ एक दोसराक प्रति घृणाके त्याग कय सरकारक प्रति असहयोग करबाक आह्वान कयलनि। हसन आरजू सेहो जनसभाकेँ सम्बोधित कयलनि।[84] एकर बाद सभ गोटे समस्तीपुर गेलाह जाहि ठाम 3 बजे अपराह्न सऽ जनसभाके सम्बोधित कयलनि। जकर अध्यक्षता बाबू गिरिवरधर द्वारा कएल गेल।

मनोरंजनक ओहि गायन सऽ सभा प्रारंभ भेल जाहि सऽ दरभंगामे भेल छल तकर बाद समस्तीपुरक नामी ओकील बाबू गिरिवरधरक स्त्री द्वारा गाँधी, मोतीलाल नेहरू आऽ शौकत अलीक देशक आजादीक लेल कयल जा रहल प्रयासक लेल पद्यमय प्रशंसा कयल गेल। कविताक माध्यम सऽ हुनका लोकनि द्वारा हिन्दू-मुसलमानक एकताक लेल कएल प्रयासक सेहो प्रशंसा कयल गेल। तत्पश्चात् गाँधीजी उपस्थित लोकसभके पंजाबक नृशंस हत्याकांड, हिन्दू-मुस्लिम धर्मक रक्षा एवं सुराज विषय पर विस्तार सऽ विचार रखलनि।[85] मारवाड़ी लोकनिकेँ सम्बोधित करैत कहलनि जे दरभंगा आऽ समस्तीपुरक मारवाड़ी लोकनि एहिठामक बच्चासभक शिक्षाव्यवस्थाक भार उठाबथि। नेशनल स्कूल आऽ कालेज स्थापनाक लेल धन खर्च करबाक आह्वान कयलनि। स्त्रीगणसभके स्वदेशी अपनेबाक लेल चर्खा चलेबाक लेल प्रेरित करैत जोलहासभके सेहो एहि काजके बढ़ेबाक लेल कहलनि। मारवाड़ीसभके कहलनि जे विदेशी कपड़ाक बदला स्वदेशीक व्यापारके बढ़ाबथि। गाँधीजी कहलनि जे हमर सरकार अधर्मी अछि। हमरासभक संग धोखा कय रहल अछि। पंजाबमे 1500 हमर आदमीके मारि देलक। एहि राक्षसके सहयोग करब पाप थिक। लोकसभके कहलनि जऽ हम सुराज आऽ राम राज्य चाहैत छी तऽ एकर कचहरी, स्कूल आऽ दोसर संस्था सभके बहिष्कार करी। बच्चासभकेँ स्कूल कालेज छोड़य लेल कहलनि आऽ सिपाहीमे भर्ती सऽ सेहो मना कयलनि। गाँधीजी जालियांबाला बागक हत्याकांडक प्रतिकार आऽ धर्मक रक्षाक हेतु राक्षसी विरोधक लेल हिन्दू-मुस्लिम एका पर जोर दैत विदेशी त्यागि स्वदेशी अपनेबाक बेर-बेर आग्रह कयलनि आऽ मारवाड़ी समुदायके आंदोलनक क्रिया-कलापक वास्ते दान देबाक लेल सेहो प्रेरित कयलनि। दोबारा छात्रसभकेँ असहयोग आंदोलनमे भाग

लेबाक लेल स्कूल कालेज त्याग करबाक निर्देश देलनि। गाँधीजी कहलनि स्वतंत्र भेला पर आहाँ लोकनिक अभिभावक आऽ संबंधी लोकनिके सहयोग कय सकब तैं आहाँ सभक धर्म बनैत अछि जे स्कूल कालेजक बहिष्कार करी।

अध्यक्षता करैत बाबू गिरिवरधरजी गाँधीजीक भाषणक समर्थन करैत कहलनि जे समस्तीपुरमे कपड़ा उद्योग प्रगति पर अछि मुदा पर्दाप्रथाक कारणें कामकाजी स्त्रीगण लोकनिक काज देखार नहि भऽ पबैत अछि। एहिठाम गामे-गाम चरखा चलैत अछि ताहि कारणे एहि ठामक वस्त्र किछु सस्ता अछि। मौलाना शौकत अली सेहो हिन्दू-मुसलमान एका पर अपन भाषाणमे जोर देलनि।[86]

समस्तीपुर सऽ मुंगेरक लेल गाँधीजी विशेष ट्रेन सऽ प्रस्थान कयलनि। यात्राक क्रममे बरौनी स्टेशनक प्लेटफार्म पर सेहो उपस्थित जनसभाके सम्बोधित कयलनि। तत्पश्चात मुंगेर गेलाह, जतय शाह मुहम्मद जुबैरक ओहिठाम रहलाह। दोसर दिन 9 बजे प्रात: एकटा जनसभाके सम्बोधित कयलनि।

गाँधीजीक एहि यात्रामे कतोक एहन अपूर्व घटनासभ भेल जकर गंभीरतापूर्वक अध्ययन कयला सऽ भारतक इतिहास लेखनमे महत्त्वपूर्ण अध्याय जुटि सकैछ। 7 दिसम्बर 1920 कऽ मुजफ्फरपुर सऽ मौलाना शौकत अली आऽ मजहरूल हकक संग गाँधीजी सोझे बेतिया गेलाह आऽ बेतियाक बैरिस्टर बाबू बिपिन बिहारी वर्माक संग 8 दिसम्बर कऽ भोरे मछरगांव एवं फुलबरिया कांडक जाँच करबाक लेल गेलाह।[87] ग्रामीण लोकनिक व्यथा सुनि गाँधीजी हुनका लोकनिक कायरता लेल बहुत खिसिएलनि जे ओ लोकनि भारतीय पुलिस द्वारा कयल गेल हुनक सम्पत्तिक लूटि आऽ अपन स्त्रीगणक इज्जतिक रक्षा किएक नहि कऽ सकलाह। गाँधीजी अहिंसा आऽ असहयोगक विषयपर साढ़े तीन हजार लोकक एकटा सभाके सम्बोधित करैत कहलनि जे एकर मतलब ई नहि जे कायर बनि अपन निजी संपत्ति आऽ स्त्रीगणक इज्जतिक रक्षा नहि करी। असहयोग अपन निजी सुरक्षाक अधिकार समाप्त नहि करैछ। गाँधीजी कहैत छथि 'भविष्यमे जऽ कियो आहाँक सम्पत्ति लूटय लेल वा स्त्रीगणक इज्जति लुटबाक प्रयास करय तऽ कायर बनि सहन नहि करी अपितु हमरा एहिबात सऽ प्रसन्नता हएत जे आहाँ सत्यक रक्षाक लेल ओकरा मारि दी अथवा मरि जाइ।'[88]

एहि सभाक अध्यक्षता विपिन बिहारी वर्मा कय रहल छलाह आऽ हिन्दू-मूसलमानक एकटा पैघ जुटान छल। ई कथन गाँधीजीक एहि अर्थे महत्वपूर्ण छल जे जाहि चम्पारणक भूमि पर मात्र तीन साल पहिने ईश्वर, सत्य ओ अहिंसाक पहिल प्रयोगक जीत भेल छलनि ताहि ठाम ई कहय पड़लनि जे सत्यक रक्षाक लेल जान लऽ ली चाहे अपन जान दऽदी।[89] सभामे उपस्थित लाल पगड़ीधारी सिपाहीसभके ँ देखि कहलनि जे आहाँक कर्त्तव्य रैयतसभकेँ प्रताड़ित करब नहि अपितु हुनका लोकनिकेँ कष्ट सऽ रक्षा करब अछि।[90]

सभाक अध्यक्षता करैत विपिन बिहारी वर्मा, बागेश्वर माधोके एहि बातक लेल खिसिएलनि जे लौरियाक सब-इन्सपेक्टरक सम्मनक उत्तर किएक नहि देलनि। असहयोग कयनिहारकेँ कोनो तरहक यातनाके सहबाक लेल तैयार रहबाक चाही। बेसी सऽ बेसी जेल होइत जान थोड़े मारि दैत। गाँधीजी लौरिया थाना पर भेल उपद्रव लेल सरकार, पुलिस आऽ निलहाके जिम्मेवार मानलनि संगहि ग्रामीण लोकनिके सेहो दोषी मानलनि। ओ एहि बातक लेल गामक लोकक कथन पर विश्वास कयलनि जे दरोगा आऽ ओकर सहयोगी गाम जाकऽ उत्पीड़ित कयलनि। गाँधीजी कहैत छथि जे पुलिसक उत्पीड़नक बदला गामक लोकके लेबाक चाही छल।[91]

एहि सऽ पहिने गोरक्षिणी सभामे 500 हिन्दूसभकेँ सम्बोधित करैत कहलनि जे हिन्दू आऽ मुसलमानकेँ मीलि कऽ गोहत्या बंद करबाक प्रयास करक चाही। एहिमे सरकारी पदाधिकारीक बात पर ध्यान नहि देल जाय किएक तऽ ओ लोकनि (डिभाइड एण्ड रूल) फूट कय राजकरबाक नीति अपनौने छथि।[92]

गाँधीजी बेतिया सऽ दरभंगा जेबाक क्रममे 9 दिसम्बर कऽ मोतिहारीमे गोरक्षिणीक एकटा सभामे बेतियामे कहल भाषणकेँ दोहरौलनि। एहिठाम 2500 लोकमे एक सय मुसलमान सेहो रहथि। गाँधीजी हिन्दू-मुसलमान एकाक संगहि लोकक कायरताक परित्यागक लेल निर्देशित कयलनि। कहलनि जे यद्यपि हमरा लोकनिक आदर्श अहिंसा अछि मुदा स्त्रीक अपमान देखल नहि जा सकैछ।[93]

लहेरियासराय (दरभंगा)क सभा (10 दिसम्बर) सऽ अपूर्व गप्प ई निकलल जे शौकत अली स्वयं मुसलमान रहितहु हिन्दू-मुसलमानक बीच परस्पर सम्मान लेल गोहत्या पर रोक लगा कऽ गायक बदला बकरीक बलि देबाक लेल आग्रह कयलनि संगहि ओ ईहो कहलनि जे अंग्रेजीक शासनक पश्चात् जखन हमरा लोकनि शासनमे आयब तऽ सभ सऽ पहिने गोहत्यापर प्रतिबंधक लेल कानूनक व्यवस्था करब।[94] सामाजिक समरसताक लेल ई हुनक वक्तव्य भारतीय इतिहास लेखनक लेल एकटा विलक्षण संदर्भ अछि। एहि दृष्टिएँ मिथिलाक ई परिभ्रमण गाँधीजीक बड़ महत्त्वपूर्ण रहल जकरा जगजियार करब आवश्यक अछि।

गाँधीजीक तेसर परिभ्रमण 9 अक्टूबर 1925 ई. कऽ पूर्णिया जिला सऽ प्रारंभ भेल। सकरी गली घाट सऽ मनिहारीघाट पार कय भोरे-भोर गाँधीजी मनिहारी एलाह जतय देशबंधु मेमोरियल फंडक लेल एकटा बटुआ लोकसभ दान कयलकनि। एतय सऽ ट्रेन पकड़ि कटिहारमे एकटा सामान्य जनसभाके संबोधन कयल तत्पश्चात एकटा स्त्रीगणक सभा सेहो कयलनि। कटिहार सऽ दोसर दिन किशनगंज जाय एकटा विशाल जनसभाके संबोधन कयलनि आऽ देशबन्धु मेमोरियल फंडक लेल बेहरी सेहो ओसुल कयलनि। एतय समृद्ध मारवाड़ी लोकनि जुटल छलाह तिनका खद्दरक व्यापारक लेल प्रेरित कयलनि। किशनगंज

म्युनिसिपैलिटी दिस सऽ भव्य स्वागत कयल गेल छलनि।[95] 11 अक्टूबर 1925कऽ गाँधीजी प्रात: 9 बजे किशनगंज सऽ ट्रेन द्वारा अररिया पहुँचलाह।[96] अबैत देरी सभ सऽ पहिने मोटरगाड़ी सऽ सौंसे नगर घुमि गेलाह। यद्यपि संपूर्ण अररियामे विशाल जनसमुदाय जुटल छल मुदा पूर्णत: शांत आऽ सुव्यवस्थित छल। डिस्ट्रिक्ट बोर्डक इन्सपेक्सन बंग्लामे एक घंटा आराम कयला उत्तर मैक इन्टोश क्लब गेलाह जतय जनसभा प्रस्तावित छलनि। पहुँचैत देरी स्वागत समितिक अध्यक्ष तारा प्रसन्न दासगुप्ता, आ सचिव बाबू तारकेश्वर राय (दूनू ओकील) द्वारा गाँधीजी सऽ आग्रह कयल गेल जे सभसऽ पहिने स्त्रीगणक सभाके संबोधित करथि तहिना टेक्निकल इन्स्टीच्यूटक हॉलमे गाँधीजी संबोधित कयलनि। एहिठाम स्त्रीगणक पैघ जुटान छल जाहिमे चरखा सऽ सूत काटनिहारिसभ सेहो छलीह। एहिठाम नीक बेहरी ओसूली भेल रहनि। किछु स्त्रीगण तऽ अपन सोनक गहना सेहो देलथिन्ह। तत्पश्चात रामकृष्ण सेवा आश्रमके गाँधीजी देखलनि आऽ बड़ प्रसन्न भेलाह। अररियाक आमजन आऽ लोकल बोर्ड द्वारा पृथक-पृथक गाँधीजीके ँ सम्मानित कयल गेल। एहिठाम गाँधीजी लोकसभकेँ कहलनि 'चरखाके अपनाउ, हिन्दू मुसलमानक बीच एका बढ़ाउ, छूआ-छूतके मेटाउ, खादीक व्यवहार करू आ संयम राखू।'[97] भाषणक अंतमे देशबन्धु मेमोरियल फंडक लेल बेहरी मंगलनि जे नीकजकाँ भेटलनि। एहिठामक सभाक पश्चात् गाँधीजी एक बजे दिनमे फारबिसगंजक लेल ट्रेन पकड़ि लेलनि। एहिठाम सेहो दस हजार लोकक जुटान भेल छल।[98]

दोसर दिन 13 अक्टूबर कऽ गाँधीजी पूर्णिया जिलाक विष्णुपुर गामक भ्रमण कयलनि। एहिठाम पचास हजार सऽ बेसी लोकक विशाल जनसभा द्वारा गाँधीजीके ँ स्वागत कयल गेलनि आऽ देशबन्धु मेमोरियल फंडक लेल पर्याप्त बेहरी भेटलनि। मुदा कार्यकर्ताक सद्प्रयास सऽ सभसऽ बेसी शांत आऽ सुव्यवस्थित ढंग सऽ लोक एहिठाम उपस्थित भेलाह। संध्याकाल गाँधीजी एकटा हिन्दी लाइब्रेरी, मातृमंदिरक शुभारंभ कयलनि जे बाबू लालचंदजीक स्त्रीक स्मृतिमे स्थापित कयल गेल छल।[99] देशबन्धु मेमोरियल फंडक लेल ओ एक हजार टका बेहरी देने रहथि। एकर बाद गाँधीजी एकटा विशाल साम्यानामे स्त्रीगणक सभाके सम्बोधित कयलनि। एतय पाँच हजार टका बेहरीक रूपमे गाँधीजीकेँ भेटलनि।[100]

गाँधीजी 14 अक्टूबर कऽ पूर्णिया अयलाह जतय दरभंगाहाउस मैदानमे एकटा विशाल जनसभाके सम्बोधित कयलनि। हिन्दू महासभा, डिस्ट्रिक्ट कांग्रेस कमीटी, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, म्युनिसिपैलिटी आऽ संकीर्त्तन समाज द्वारा स्वागत कएल गेल। पूर्णियामे गाँधीजीके सतरह हजार टका बेहरीमे भेटलनि जाहिमे सऽ किछु मात्र बिहार विद्यापीठके देल गेल आऽ बाकी पंद्रह हजार टका देशबन्धु मेमोरियल फंडमे। कुल बेहरी एहि यात्रामे प्राय: 50000 टका भेल रहनि जाहिमे सऽ किछु भाग ऑल इंडिया स्पीनर्स एसोसिएशनके प्रदान कयल गेल।

ओहिदिन संध्यामे गाँधीजीक सम्मानमे अतिथि सत्कार कुमार गंगानंद सिंह अपना घर पर कयलनि।[101] कुमार साहेब पूर्णियामे गाँधीजीक आतिथ्य सत्कारक व्यवस्थापक रहथि। गाँधीजी कहैत छथि जे चम्पारण आऽ पूर्णियाक वातावरण आऽ लोक समान बूझि पड़ल।[102]

गाँधीजी एहि यात्राक अंतिमचरणमे हाजीपुर गेलाह जतय एकटा स्थानीय नेशनल स्कूलक प्रिन्सिपलक कुशल प्रबंधनक प्रशंसा कयलनि। प्रसिद्ध ओकील जनकधारीबाबू एहि स्कूलक व्यवस्थापक छलाह।[103] गाँधीजी सोनपुरमे सेवाश्रमक शुभारंभ समारोहमे भाग लेलनि जतय प्रतिवर्ष मेलाक समयमे तीर्थयात्री लोकनि आराम करैत छलाह।[104]

3 फरवरी 1927कऽ **यंग इडिया**मे गाँधीजी दरभंगाक चर्चा करैत लिखैत छथि जे 'दरभंगा एकटा पवित्र भूमि अछि जे तीर्थ जकाँ लगैत अछि। एहि ठामक खादी उद्योगक चर्चा करैत पण्डौल, सकरी, मधुबनी आऽ कपसियामे एहि विधाक जादूगरीक दृश्य देखबामे आयल।'[105] विशेषकऽ मुसलमान स्त्रीगणक कार्यपटुता सऽ बड़ प्रभावित भेलाह। जोलहा परिवारक हजारो स्त्रीगण एहि कार्यमे लागल रहथि। कोकटी खादीक बुनाई देखि गाँधीजी बड़ प्रभावित भेलाह जे स्त्रीगणक आंगुरक निपुणता आऽ तेजी कते विलक्षण छल। एकटा बूढ़ीक संवादक सेहो चर्चा गाँधीजी करैत छथि जे की? हुनका लोकनिक समस्या छलनि आऽ कतेक ओ सभ कमालैत छलीह? बेल्हवार गामक ब्राह्मण टोलक कन्या, स्त्रीगण आऽ बूढ़ी सभक टकुरी काटब देखि विस्मित भेल रहथि।[106] कपसिया गामक[107] कतोक घरक अवलोकन करैत देखलनि जे एतय स्त्री-पुरुष, बूढ़, बच्चा सभ गोटे एहि काजमे मग्न रहथि।

गाँधीजी बुनकरसभ सऽ बैसि कऽ गप्प करय लगलाह तऽ ओकर प्रवक्ता कहलकनि जे हिन्दू आऽ मुसलमान स्त्रीगण ओ पुरुष भाय-बहिन जकाँ सूत कताई आऽ बुनाई करैत छथि। गाँधीजीक ई पुछला पर की अहाँ सभमे झगड़ा सेहो होइत अछि? तऽ ओ कहलनि जे हमरा सभकेँ पलखति कहाँ जे झगड़ा करब। झगड़ा होइतो अछि तऽ एक दोसरक समुदाय सऽ नहि अपितु अपने-अपने समुदायक भितर होइछ। ओ कहलकनि जे हमरा सभक स्त्रीगण सूत काटैत छथि आऽ पुरुषसभ बुनाई करैत छी। ओ ई हो कहलकनि जे ब्राह्मण पुरुषसभ सेहो अपन स्त्रीगणक कताईमे सहयोग करैत छथि।

दरभंगाक पश्चात् गाँधीजी, मुजफ्फरपुरक एकटा सभाक निंदा राक्षस सभा कहि कयलनि अछि। चम्पारणक सभा सेहो सुव्यवस्थित नहि छलनि ओना सभ ठामक सभामे लोक बड़ प्रेम सऽ उमड़ल रहनि। सभा आऽ बेहरी ओसुली सेहो नीक भेलनि मुदा मोतिहारीक सभाक अव्यवस्थाक कारणे भीड़क हिसाबे बेहरी नहि भेटलनि। लोकसभ अपने हाथें गाँधीजीकेँ हाथमे बेहरी देबय चाहैत छलनि आऽ मंच छोट रहै। बेगूसरायमे सभा व्यवस्थित रहैक तऽ लोक अपन बेहरी गाँधीजीक हाथमे दय संतुष्ट भेलाह।[108] मुजफ्फरपुरक

धोबी द्वारा देल गेल बेहरीक विशेष चर्चा गाँधीजी कयलनि अछि। एतय स्कूल आऽ कालेजक छात्र-छात्रासभ सेहो जुटल रहथि। चम्पारणक सुखद स्मृतिक सेहो चर्चा कयलनि।[109]

गाँधीजी दरभंगाक एकटा सभाक चर्चा करैत छथि। ओ एकटा अनाथालयक स्थापना लेल आयल रहथि तऽ रातिमे जखन सभाकेँ सम्बोधित करैत रहथि तऽ देखलनि जे बहुत बेसी संख्यामे पुरुष वर्ग बैसल छथि आऽ पर्दाक पाछू स्त्रीगणसभ सेहो रहथि ई देखि ओ भितर सऽ अपमानित आऽ पीड़ित भेलाह। कहैत छथि जे एहिठामक पढ़ल-लिखल लोक सेहो रूढ़िवादी व्यवस्थाक जे पर्दाप्रथा छल तकरा तोड़बाक प्रयास नहि कयलनि। कहैत छथि जे स्त्रीगण आगाँ कोना बढ़तीह? हुनका पुरुष जकाँ स्वतंत्रता कियैक नहि देल जाइछ? ओ शुद्ध हवाक लेल बाहर निकलबाक लेल कियैक ने समर्थ छथि? गाँधीजी कहलनि जे पवित्रता बंद घरहिटामे नहि उपजैत छैक आऽ ने जबर्दस्ती थोपल जा सकैछ। जगज्जननी सीता आऽ द्रौपदीक पवित्रताक चर्चा करैत कहलनि जे हुनका लोकनिक पवित्रता कोनो पुरुष सऽ नहि अपितु अपन आत्मविश्वास आऽ आत्मबल सऽ बाँचल रहलनि। दरभंगाक पर्दा प्रथाक कठोर शब्दमे निंदा करैत गाँधीजी एकरा हटेबाक लेल आह्वान कयलनि।[110]

1927-28मे गाँधीजीक सहयोग सऽ दरभंगामे पर्दा विरोधी आंदोलन प्रारंभ भेल। खादी कार्यकर्ता रामनंदन मिश्र एहि आंदोलनक अगुआ छलाह जे गाँधीक आशीर्वाद प्राप्त करबा लेल साबरमती आश्रम गेल छलाह। ओ अपन स्त्री राजकिशोरीदेवीकेँ एहि पर्दा प्रथा सऽ बाहर करय चाहैत छलाह।[111] गाँधीजी हुनक स्त्रीक सहायताक लेल मगनलाल गाँधीजीक पुत्री राधा बहन आऽ दलबहादुर गिरिक पुत्री दुर्गा देवीके पठौलनि। मुदा बिहार एलापर मगनलाल गाँधी दुखित पड़ि गेलाह आऽ 23 अप्रैल 1928कऽ पटनामे ओ स्वर्गवासी भय गेलाह।[112] ओहि समय हुनक पुत्री गाम-गाम भ्रमण कय पर्दा विरोधी आंदोलनक लेल काज कय रहल छलीह। मगनलाल गाँधी महात्मा गाँधीक पित्तीक पौत्र छलाह जे 1904ई.सऽ हुनका संग काज करैत छलाह। जखन ओ बिहार एलाह तऽ हुनका जऽर भय गेलनि। ब्रजकिशोरबाबूक संरक्षणमे पटनामे हुनक उपचार भेलनि मुदा नओ दिन जऽर रहलाक बाद हुनक मृत्यु भय गेलनि।[113] हुनका सन धर्मयोद्धाक मृत्यु सऽ पर्दाविरोधी आंदोलनके बड़ बेसी प्रेरणा भेटलैक।[114]

18 जनवरी 1927कऽ गाँधीजी मुजफ्फरपुर जिलाक मैरवा एलाह जतय 30000 सऽ बेसी लोक जुटल छलाह। ओतय सऽ दलसिंहसराय, समस्तीपुर आऽ दरभंगामे जनसभाके संबोधित कय साढ़े छओ हजार टका बेहरी ओसूल कयलनि। एहि यात्रामे सभ सऽ पैघ बेहरी एतय भेटल छलनि।[115] 24 जनवरी 1927 धरि गाँधीजी सकरी, पण्डौल, मधुबनी, बेल्हवार, कपसिया, बैरगिनिया, सीतामढ़ी, शिवहर, घोड़ासहन, ढाका, नरकटियागंज, बेतिया, मोतिहारी होइत 25 जनवरी कऽ भोरे मुजफ्फरपुर एलाह आऽ जनकधारी प्रसादक ओहिठाम

विश्राम कयलनि। ओतय खद्दर डीपो ओ रामकृष्ण आश्रम देखलनि आऽ एकटा जनसभाके संबोधित कयलनि। पुनः बेरू पहर एकटा स्त्रीगणक सभाके संबोधित कयलनि।[116] 26 जनवरी कऽ बेगूसराय, खगड़िया आऽ गोगरीक भ्रमण कयलनि।[117] बेगूसरायमे सभा बड़ सुव्यवस्थित छल।[118] एहि यात्रामे गाँधीजीकेँ देशबन्धु मेमोरियल फण्डमे पर्याप्त बेहरी तऽ भेटबे कयलनि संगहि आमजनकेँ जागरूक करबाक अवसर सेहो प्राप्त भेलनि।[119] गाँधीजीक संग भ्रमण केनिहार महादेव देसाई गाँधीक चमत्कारी नेतृत्वक संग-संग बिहार परिभ्रमणक विस्तार सऽ चर्चा कयलनि अछि।[120]

गाँधीजी मिथिलाक अगिला परिभ्रमण 1934 ईस्वीक भूकम्पक पश्चात् भेल छल। 15 जनवरी 1934 कऽ 2.15 बजे अपराह्न बड़ पैघ आ विनाशकारी भूकम्प भेल। 17 जनवरी कऽ राजेन्द्रबाबूकेँ जहल सऽ छोड़ि देल गेलनि। ओ आमजनक सहायतार्थ बिहार सेंट्रल रिलीफ कमीटीक स्थापना कय 21 जनवरी कऽ गाँधीजीकेँ तार द्वारा सूचित कयलनि। गाँधीजी ओहि समय दक्षिण अफ्रीकामे हरिजन उत्थान ओ छूआ-छूत विरोधी आंदोलनक लेल गेल छलाह। मुदा एहिठामक दुःखद समाचार सूनि ओहि ठामक लोकके कहलनि जे जाहिठाम सीताक जन्म भेल आऽ जनक राज कयलनि ताहिठाम विनाशकारी भूकम्प भेल अछि हजारो-हजार लोक मुइलाह अछि आऽ ताहू सऽ बेसी घायल छथि। कतोक नगर ध्वस्त भय गेल। कतोक ठाम सऽ सहायता प्रदान कयल जा रहल छैक। गाँधीजी ओहिठाम ईहो कहलनि जे ई मनुक्खक पापक कारणें देवी प्रकोप अछि तेँ छूआ-छूतके त्याग कयल जाय संगहि आर्थिक सहायता सेहो देल जाय।[121] भाषणक पश्चात् ओहिठाम भूकम्प पीड़ितक सहायताक लेल गाँधीजीकेँ चेक प्रदान कयल गेलनि। तत्पश्चात् गाँधीजी राजेन्द्रबाबूकेँ एकटा पत्र लिखि ओहिठामक स्थिति सँ अवगत करौलनि। पुनः संसारक कतोक देशसभ सऽ आर्थिक सहायता लेल अपील कयलनि। 11 मार्च 1934 कऽ गाँधीजी पटना अयलाह जिनक स्वागतमे राजेन्द्रबाबू, सेठ जमनालाल बजाज आऽ प्रो. कृपलानी मुगलसराय गेलाह। गाँधीजीक संग बल्जी भाई देसाई, हिम्मत खेर, पृथ्वीदास, लक्ष्मीदास, मीरा बहन, कुमारी उमादेवी, कुमारी किशन धमरकर आऽ देवराजन सेहो अयलाह। मुगलसराय सऽ पटना अयबाक क्रममे सभ स्टेशन पर गाँधीजी उपस्थित लोकसभ सऽ बेहरी ओसूल करैत अयलाह।[122]

12 मार्च कऽ पटनामे गाँधीजी एकटा टिप्पणी कयलनि- ''हमरा सभकेँ बुझबाक चाही जे धरती माताक कम्पन सऽ बेसी अधलाह छूआ-छूतक कम्पन भऽ सकैछ।'' 13 मार्चक साँझ कऽ अपन दलक संग पटनाक दशाक अवलोकन कय दोसर दिन 14 मार्च कऽ भोरे अपन दलक संग नाव सऽ गंगा पार कय मोटर गाड़ी सऽ सोनपुर अयलाह। पुनः गंडक पारकय हाजीपुर होइत लालगंज साढ़े दस बजे प्रातः अयलाह। दू घंटाक बाद एतय सऽ

मोतिहारीक लेल प्रस्थान कयलनि। प्राय: पाँच बजे साहेबगंज होइत चम्पारण जिलाक केसरिया अयलाह आऽ प्राय: छओ बजे केसरिया सऽ चलि आठ बजे साँझमे राजपुर, पिपरा होइत मोतिहारी अयलाह। हुनका दलमे मिस क्यूरेल, मिस लेस्टर, मिस स्लेस, मिस हौग, मीरा बहन, बाबू राजेन्द्र प्रसाद, रामदयालु सिंह, बाबू कृष्ण बल्लभ सहाय सदृश कतोक व्यक्तिसभ रहथि।[123] बाटमे कतहु भाषण नहि कयलनि मुदा कतोक समस्यासभ पर विमर्श करैत रहलाह।[124]

15 मार्चक भोरे गाँधीजी अपन दलक संगहि विपिन बिहारी वर्मा आऽ प्रजापति मिश्रक संग मोतिहारी सदर आऽ ढाका थानाक किछु गामक भ्रमण कय बिहार सेन्ट्रल रिलीफ कमीटीक पकड़ीदयाल आऽ केनहारा केन्द्रक निरीक्षण कयलनि। 11 बजे धरि घुरि आबि बेरूपहर मोतिहारी शहरक भ्रमण कयलनि। लोकसभकेँ कहलनि मात्र लाचार लोक जे छी सएह टा दान स्वीकार करी अन्यथा भिखारि कहल जायब। ओ ईहो कहलनि जे ईश्वर जे हमरा लोकनिके किछु दान देलनि अछि ओकरा स्वीकार करी आऽ दानक अर्थ ई भेल जे एहि समयमे एक दोसर सऽ केओ पैघ नहि से बूझि छूआ-छूतके अंत करी।[125]

साँझमे प्रार्थनाक पश्चात् चम्पारणमे कार्यरत राहत कमीटीक प्रतिनिधिसभ सऽ गाँधीजी भेंट कय प्रसन्नता व्यक्त कयलनि जे एहन आफतक समयमे काँग्रेसक कार्यकर्तालोकनि त्वरित सहायतामे लागि गेलाह। दोसर दिन 16 मार्च कऽ गाँधीजी अपन दलक संग चलि 9 बजे प्रात: मुजफ्फरपुर अयलाह। एहिठाम गाँधीजी सर्चलाइट अखबारक प्रतिनिधि सऽ वार्ताक क्रममे भूकम्प पीड़ित क्षेत्रक अपन भ्रमण आऽ राहत सामग्रीक स्थितिक विषयमे जनतब देलनि। तीन टा गाड़ी सऽ गाँधीजी अपन दलक संग मुजफ्फरपुरक भ्रमण कय ढहल घरसभके देखलनि एहि काजमे हुनका संग महेश प्रसाद सिन्हा सेहो रहथि। तत्पश्चात् सभ गोटे महेशबाबूक आवास पर गेलाह आऽ 12.25 बजे अपराह्न जूरन छपड़ा मोहल्लामे अवस्थित महाराजाक कोठी परिसरमे जनसभाके सम्बोधित करबाक लेल गेलाह। एहिठाम गाँधीजी राहत कार्य आऽ छूआ-छूतक विषयमे चर्चा कयलनि एकर बाद पटना चलि गेलाह।[126]

27 नवंबर कऽ प्रात: 9 बजे गाँधीजी, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, मथुरा प्रसाद, मीरा बहन, मिस कुसुम बहन (सेठ जुमना लाल बजाजक पुत्री), बुल्जी (गाँधीजीक स्टेनो), राजेन्द्रबाबूक बहिन आऽ दूटा मराठी स्त्रीगणक संग सोनपुर अयलाह। उपस्थित भीड़क आग्रह पर गाँधीजी सम्बोधित कयलनि। एतय सऽ सभगोटे मोटरगाड़ी सऽ गंडक बान्ह पकड़ि सराय आबि उपस्थित भीड़केँ सम्बोधित कयलनि। ओतय सऽ परशुरामपुर अयलाह जतय लोकसभ पंडाल बनाकय रखने छलाह। गाँधीजी ओहूठाम भाषण कयलनि एतय सभ गोटा पानापुर होइत छपरा चल गेलाह।[127]

पुन: 28 मार्च 1934कऽ गाँधीजी छपरा सऽ मुजफ्फरपुरक लेल ट्रेन पकड़ि लेलनि। बाटमे हाजीपुर आऽ सोनपुर स्टेशन पर जनसमुदायके ँ सम्बोधित करैत राहत कार्य आऽ छूआ-छूतक चर्च कयलनि संगहि बेहरी सेहो ओसूल कयलनि जाहिमे सोना आऽ चानीक सिक्कासभ सेहो भेटलनि। 7 बजे साँझमे मुजफ्फरपुर अयलाह आऽ मोटरगाड़ी पकड़ि सोझे जूरन छपरा आबि एकटा बैसारमे भाग लेलनि। एहि ठाम सेहो आत्मशुद्धिक लेल छूआ-छूत के परित्याग करबाक आह्वान करैत राहत कार्य लेल बेहरी सेहो मंगलनि। एतय सऽ बाउलघाट आश्रम आबि रात्रि विश्राम कयलनि।[128]

29 मार्च 1934 कऽ भोरे साढ़े सात बजे गाँधीजी अपन दलक संग मोटरगाड़ी सऽ सीतामढ़ीक लेल विदा भेलाह ओ साढ़े आठ बजे बेदौल अयलाह जतय बिहार सेन्ट्रल रिलीफ कमीटी एकटा केन्द्र स्थापित कयने छल। ओहिठाम एकटा विशाल जनसमूह द्वारा हुनक अभिनन्दन भेल तकर पश्चात् नाव सऽ कटरा थानाक भर्थुआ चर जे बाढ़िग्रस्त क्षेत्र छल, देखबाक लेल गेलाह। एकटा जनसभाके सम्बोधित कय 10.30 बजे बेलसन्ड अयलाह आऽ सेन्ट्रल रिलीफ कमीटीक घरमे 3 बजे धरि सुस्तेलनि। तकर बाद ओतय सऽ चन्दौली गेलाह जतय विशाल भीड़ जुटल छल। अपन भाषणमे गाँधीजी लोकसभके ँ कहलनि जे छूआ-छूत के त्याग करू आऽ दोसर पर निर्भरताक बदले अपन काज अपनहि करू। तत्पश्चात् सीतामढ़ी अयलाह जतय गाँधी आश्रम सऽ कतोक स्वयंसेवक भूकम्प पीड़ितक सहायता लेल आयल छलाह। एहिठाम सेहो जनसभाके ओ सम्बोधित कयलनि। दोसर दिन 30 मार्च कऽ भोरे साढ़े सात बजे कमतौलक लेल विदा भेलाह आऽ बाटमे सुरसंड आऽ पुपरीमे जुटल भीड़के किछुकालक लेल सम्बोधित कयलनि। जाहिमे छूआ-छूत मिटेबाक लेल आऽ अपन काज अपनहि करबाक लेल निर्देशित कयलनि। बाटमे एक ठाम रामवृक्ष बेनीपुरी सेहो गाँधीजीक अभिनन्दन कयलनि।[129]

कमतौल सऽ गाँधीजी दरभंगा अयलाह जिनका अगवानीमे दरभंगा महाराजक छोट भाय कुमार साहेब आऽ यूरोपियन मैनेजर डेनबी छलाह।[130] यूरोपियन गेस्ट हाउसमे महाराजाधिराज आओर किछु प्रसिद्ध लोकसभ गाँधीजीके स्वागत कयलनि।[131] राज मैदानमे एकटा विशाल जनसमूह गाँधीजीक दर्शन लेल जुटल छल। एहिठाम गाँधीजी आत्मशुद्धता एवं सामाजिक सुधारक लेल छूआ-छूतक परित्याग करबाक निर्देश देलनि। गाँधीजी कहलनि जे मनुक्खक पापक कारणें प्रकृति चेतावनी दय रहल अछि। हल्लाक कारणें गाँधीजीक भाषण ठीक सऽ नहि सुनबामे आयल जखनि कि लाउडस्पीकरक व्यवस्था छल।[132] 31 मार्च कऽ गाँधीजी दरभंगा सऽ चलि दुपहरियामे 11.30 बजे मधुबनी अयलाह आऽ चरखासंघके देखबाक लेल विलमि गेलाह। ओतय सऽ राजनगर अयलाह। भूकम्पक कारणें एहिठामक भव्य भवनसभक ध्वंसावशेषके देखि गाँधीजी अत्यंत पीड़ित भेलाह।[133] ओतय सऽ घुरि मधुबनी आबि साँझमे

ए.डी.ओ. आर्चर आऽ ए.एस.पी. मि. मल्लिक सऽ वार्ता कयलनि। मधुबनीक एक जनसभामे भाषणक क्रममे किछु सनातनी लोकनि कारी झंडा देखौलनि।[134] के.के. दत्त कहैत छथि जे जखन गाँधीजी भाषण करैत रहथि ओहि कालमे छओटा करिया झंडा आऽ तीनटा कारी छत्ता विशाल जनसमूहमे देखबामे आयल। गाँधीजी झंडाबलासभकेँ देखि हँसैत बधाइ देलनि आऽ कहलनि 'देखू कारी झंडावलासभ आबि रहल छथि आऽ कारी छत्ताबलासभ सेहो छथि। ठीक छै हुनका लोकनिके आबए दियौन आऽ जे ओ चाहैत छथि कहय दियौन। हम हुनका लोकनिक उपस्थितिमे छूआ-छूत समाप्त करबाक विषयमे कहय चाहैत छी जे छूआ-छूतक दानवके भगाओल गेल अछि।'[135] आगू गाँधीजी छूआ-छूतक निंदा करैत भूकम्प पीड़ित लोकनिक सहायताक लेल सहयोग देबाक आह्वान करैत रहलाह। एहि बीच सहजहिं सभटा करिया झंडावलासभ बिला गेल।

मधुबनी सऽ मोटरगाड़ी सऽ विदा भय गाँधीजी 1 अप्रैल कऽ निर्मली गेलाह आऽ एक दिनमे 110 माइल भ्रमण कयलनि। बाटमे सुपौल आऽ मधेपुरा गेलाह।[136] तकर बाद सहरसामे बिलमिकऽ साँझमे प्राय: एक लाख लोकक एकटा सभाके सम्बोधित कयलनि। एकर बाद बिहपुर जाकऽ विशाल जनसभाके सम्बोधित कऽ विशेष स्टीमर सऽ गंगा टपिकय भागलपुर गेलाह। एहि स्टीमरक व्यवस्था दीप नारायण सिंह कयने रहथि। बिहपुरमे गाँधीजी कहलनि जे वएह सभ हमरा दान देथु जे हिन्दू समाजमे छूआछूतके पाप बुझैत छथि। तकरबाद बहुत स्त्रीगण आऽ पुरुषसभ दान देलनि स्त्रीगणसभ गाँधीजीकेँ पएर पकड़ि कऽ बेहरी लेबाक लेल आग्रह कयलथिन। गाँधीजी कहलनि जे केओ जन्म सऽ अछोप नहि होइछ। एहि पापके समाप्त कय आत्मशुद्धि करी।[137]

8 अप्रैल 1934 कऽ गाँधीजी राजेन्द्र प्रसाद आऽ आओर सहयोगी लोकनिक संग कटिहार अयलाह। ओतय सऽ फारबिसगंज जाकऽ हजारो लोकक एकटा जनसभाकेँ सम्बोधित कय हरिजन फंडक लेल बेहरी तसील कयलनि। 500 टका तसील भेल रहनि। फुलकाना गाँव देखिकय साँझमे गाँधीजी अररिया आबि विश्राम कयलनि। एहिठाम स्थानीय ओकील बाबू तारा प्रसन्न दासगुप्तक ओहिठाम रहलाह। 9 अप्रैल कऽ ओ पूर्णिया गेलाह जतय बाबू गोकुल कृष्ण रायक ओहिठाम रहलाह जे प्रसिद्ध काँग्रेसी नेता छलाह। एकटा विशाल जनसभा एतय भेल छल जाहिमे स्थानीय म्युनिसिपैलिटी दिस सऽ राजा पी.सी. लाल द्वारा गाँधीजीकेँ अभिनंदन कयल गेल छल। एकर अलावा स्थानीय जमींदार बाबू वीर नारायण चंदक स्त्री द्वारा सेहो 250 टका उपहारमे देल गेल। पूर्णिया जिला निवासीगण द्वारा भव्य अभिनंदन पत्र हुनका प्रदान कयल गेल छल।[138]

10 अप्रैल 1934 कऽ गाँधीजी भोरे पूर्णिया सऽ चलि टीकापट्टी गेलाह आऽ एकटा विशाल जनसभाकेँ सम्बोधित कयलनि ओतय सऽ ट्रेन पकड़ि आसाम चलि गेलाह।[139]

ओना भूकम्पक समयमे छूआ-छूतक निन्दा करबाक कारणें किछु विरोधक सामना गाँधीजीके सहय पड़लनि मुदा छूआ-छूतक विरुद्ध जे 1932 ई.मे गाँधीजी आंदोलन चलौने रहथि तकर प्रभाव मिथिलाक भूमिपर सेहो पड़ल छल। गाँधीजी अश्पृश्यता निवारण आऽ संयुक्त मतदानक लेल जे आमरण अनशनक आह्वान कयलनि तकर समर्थनमे 17 सितम्बर 1932 ई.कऽ मुजफ्फरपुरक मेहता धर्मशालामे 5000 हिन्दू जमा भेल रहथि जाहिमे रायबहादुर कृष्णदेव नारायण मेहता, जमुना कुर्जी, पण्डित रामदेव ओझा आऽ विन्देश्वरी प्रसाद वर्माक भाषण भेल रहय। चतुर्भुजस्थानमे 18 सितम्बरकऽ 4000 हिन्दू जमा भेल रहथि जाहिमे मुनेश्वरी चमार, रचिया राम, सुन्दर डोम, महन्त दर्शन दास, अच्युतानन्द चक्रवर्ती, राम बहादुर, कृष्णदेव नारायण मेहता, पंडित रामदेव ओझा आऽ किशोरी दूबेक भाषण भेल छल। 19 सितम्बर कऽ एहिठाम 4000 लोक जमा भेल रहथि जाहिमे मुख्य वक्ता वसन्ती चरण सिन्हा रहथि। खरौना हाट, शकरा थानामे 19 सितम्बर कऽ रामलखन सिन्हाक नेतृत्वमे सए हिन्दू जमा भेल रहथि। एहि थानाक भारतीपुरमे द्वारका सिन्हाक नेतृत्वमे डेढ़ सए लोक, पीरपुरमे जुगेश्वर ठाकुरक नेतृत्वमे सेहो डेढ़ सए लोक जमा भेल रहथि। ओहि दिन पारू थाना कमलपुर आऽ फतेहाबादमे सेहो गाँधीजीक समर्थनमे बैसार भेल छल। हाजीपुरक पातालेश्वर मन्दिरमे 20 सितम्बर कऽ राम प्रसाद चमार आऽ प. जयनंदन झाक नेतृत्व में 400 हिन्दू जमा भेल रहथि। तहिना लालगंजक देवीस्थानमे 19 सितम्बर कऽ राघो प्रसाद आऽ विश्वनाथ प्रसादक नेतृत्वमे 500 लोक जमा भेल रहय। सीतामढ़ीक जानकी मंदिरमे 20 सितम्बर कऽ नथुनी माइलिक नेतृत्वमे 100 हिन्दू जमा भेल रहथि तहिना बादर छपरामे काली प्रसाद सिंहक नेतृत्वमे 200 लोक जमा भेल रहथि।[140]

चम्पारणमे 19 आऽ 20 सितम्बर कऽ कतोक ठाम गाँधीजीक समर्थनमे बैसार भेल छल। बेतियाक पथरीघाट पर बाबू सुरेन्द्रनाथ ओकीलक अध्यक्षतामे 500 सऽ बेसी लोक जमा भेल रहथि। बाबू बांके बिहारी लाल, रामधारी प्रसाद आऽ जयनन्दन प्रसाद, गिरिन्द्र किशोर झा आऽ गणेश मोची सभाके संबोधित कयलनि। एहने सभा चनपटियामे सेहो भेल जाहिमे 200 लोक भाग लेलनि। मोतिहारीक धर्मसमाज मंदिरमे बाबू हरि शंकर सिंहक अध्यक्षतामे 660 लोकक बैसार भेल जाहि मे केदारनाथ मोतानी, रामदयाल साह, विष्णु देव दूबे, गणेश प्रसाद शाह, जगन्नाथ प्रसाद शाह आऽ ललित प्रसाद चौधरी सेहो भाग लेलनि। बैसारमे बाबू रघुनाथ प्रसाद मुख्तार, जगरनाथ प्रसाद चौधरी, बैजनाथ प्रसाद अग्रहरी आऽ पं. शिवशरण शर्माक भाषण भेल रहय। त्रिलोचन राम चमार द्वारा वंचित वर्गक दिस सऽ प्रस्ताव पढ़ल गेल। ओना किछु ब्राह्मण आऽ राजपूत गाँधीक प्रस्तावक विरोध सेहो कयलनि जाहिमे किछु वंचित वर्गक लोक सेहो परंपराकेँ तोड़बाक पक्षमे नहि रहथि मुदा आम सहमति सऽ प्रस्ताव स्वीकार

कएल गेल। 20 सितम्बर कऽ बेतियाक राघूबाबूक मंदिरमे डेढ़ सए लोक पूजाक लेल जुटलाह। जाहिमे राघू मल्ल, बाबू राघो शरण ओकील, जयनारायण प्रसाद, गिरीन्द्र झा, गणेश आऽ सन्तू मोची प्रमुख रहथि। मोतिहारी आऽ रक्सौलमे सेहो किछु वंचित वर्गक लोकसभ मंदिरमे दर्शन कयलनि।[141]

दरभंगाक बाबूलाल प्रधानक मंदिरमे 19 सितंबर 1932 कऽ धरणीधरबाबूक अध्यक्षतामे 500 लोकक बैसार भेल जाहिमे 50 सऽ बेसी अछोप सेहो रहथि। रामबहादुर गुप्ता, कुमर कल्याण लाल, राजेन्द्र प्रसाद आऽ दूटा मेहतर एहिमे अपन विचार रखलनि। एकटा प्रस्ताव पारित भेल जे गाँधीजीक छूआ–छूत निवारण आऽ संयुक्त मतदानक विचारकेँ समर्थन कयल जाइछ। एकटा समिति बनल जे अछोप लोकनिके मंदिरमे प्रवेशक लेल व्यवस्था करथि। बैसारक अंतमे सनकी मेहतर द्वारा बाबूलाल प्रधानक मंदिरमे प्रसाद चढ़ाओल गेल आऽ उपस्थित लोकसभमे परसल गेल जकरा ऊँच जातिक लोकसभ सेहो खयलनि।[142] तहिना बहेरा थानाक धरौरा गाममे नवादाक खर्टर झाक अध्यक्षतामे एकटा बैसार भेल जाहिमे डेढ़ सए लोक जुटल रहथि। एहि सभामे सेहो दरभंगाक निर्णयक समर्थन कएल गेल। 18 सितम्बर कऽ समस्तीपुरमे एक हजार लोकक एकटा सभा भेल जकर अध्यक्षता पथल मेहतर कयलनि आऽ मुक्तिनाथ झा, जदुनंदन सहाय, गिरवरधर, जयनारायण झाक भाषण भेल।[143]

एहि सभामे गाँधीजीक उपरोक्त दूनू प्रस्तावक समर्थन भेल जे अंग्रेज हिन्दू समाजके बाँटय चाहैत अछि मुदा हमसभ एक छी तैं अछोप लोकनिके मंदिरमे प्रवेश करेनाय आऽ इनार सऽ पानि भरेनाय हमरा सभक दायित्व अछि।[144]

समस्तीपुरक आधारपुरमे सेहो 18 सितम्बर 1932 कऽ सुखीलाल झाक अध्यक्षतामे 200 लोकक बैसार भेल। एहिमे गिरवरधर, जदुनंदन सहाय, धरमदेव प्रसाद सिंह, महावीर सिंह, बाल गोविन्द, नारायण मेहतर, गोनौर डोम आऽ परमानंद चमारक भाषण भेल। गिरवरधर द्वारा गाँधीजीक समर्थनमे अछूतोद्धार करैत अछोप लोकनिकेँ सभ सुविधा प्रदान करबाक प्रस्ताव राखल गेल जकरा सभ गोटे समर्थन कयलनि।[145] ओहि दिन दलसिंहसरायमे 500 लोकक एकटा बैसार सेहो भेल जाहिमे एक सए अछोप रहथि। रामानंद ब्रह्मयगीक अध्यक्षतामे तराई प्रसाद आऽ रामदेव सिंहक भाषण भेल आऽ गाँधीजीक अनसनक समर्थन कयल गेल।[146]

19 सितम्बर 1932कऽ ताजपुर थानाक मोरवा गाममे एकटा बैसार भेल जाहिमे राजदेव राय आऽ सोमरा डोमक भाषण भेल। एहिमे 25 गोटे भाग लेलनि आऽ अछोपक पानि पीबाक लेल कहल गेल मुदा एकटा वक्ता डोम वक्ताक पानि नहि पीलनि।[147]

17 सितम्बर कऽ 500 लोकक एकटा बैसार मधुबनीमे भेल जाहिमे डेढ़ सए अछोप सेहो रहथि। लतर राम मेहतरक अध्यक्षतामे शिवशंकर झा, पुरन्दर झा आऽ चतुरानंद दासक भाषण

भेल। गाँधीजीक अनसनक समर्थन करैत हुनकामे विश्वास व्यक्त कएल गेल। एकटा पर्चा आऽ खाली फारम बाँटल गेल जाहिपर अछोप लोकनिक हस्ताक्षर लय हिन्दूसभा आऽ वायसरायके पठाओल गेल। वक्ता सभ मेहतर अध्यक्षक पएर सेहो छूलनि।[148]

1939 ई.मे पुनः गाँधीजीक आगमन मिथिलाक पछबारि भाग चम्पारणक वृन्दावनमे भेलनि। एहिठाम ओ 3 सऽ 8 मई धरि होबयबला ऑल इंडिया गाँधी सेवा संघक पाँचम सत्रक उद्घाटन कयलनि। हुनका संग कस्तूरबा गाँधी, महादेव देसाई, प्यारेलाल, मिस सुशीला नायर आऽ प्रफुल्ल चन्द्र घोष अपन 12टा बंगालक सदस्यक संग सेहो आयल रहथि। राजेन्द्रबाबू ताहि दिन कांग्रेसक अध्यक्ष छलाह सेहो एहिठाम अपन भाषण कयने रहथि। गाँधी अपन उद्घाटन भाषणमे सत्य आऽ अहिंसा, भ्रष्टाचार आदि विषयपर विस्तार सऽ अपन विचार रखलनि।[149] संस्थामे बुनियादी विद्यालयक 56 शिक्षक आऽ छात्र प्रार्थनामे भाग लेलनि। हुनको सभके ँ गाँधीजी शिक्षाक संगहि कौशल विकासक लेल प्रशिक्षण पर बल देलनि। 5 मई कऽ कुमारबागमे गाँधीजी सऽ भेंट करबाक लेल विशाल भीड़ जुटल छल। खान अब्दूल गफ्फार खान, सरदार पटेल आऽ राजेन्द्रबाबू लोकसभके ँ गाँधीजीक कार्यकलापक महत्वक जनतब अपन-अपन भाषणमे देलनि। 4 मई कऽ गाँधीजीके ँ चम्पारणक लोक द्वारा 20000 टका विदाईमे प्रदान कयल गेलनि। गाँधीजी चम्पारणक लोकक प्रति आभार व्यक्त करैत चम्पारण सऽ पुरान प्रेमक चर्चा कयलनि आऽ एहिठामक लोकक दशा सुधारक लेल आवश्यक दिशानिर्देश प्रदान कयलनि। गरीबक दशामे सुधारक लेल चरखाक प्रयोगक संग-संग आन-आन काज करबाक निर्देश सेहो देलनि।[150]

गाँधीजीक मिथिलाक परिभ्रमणमे कतोक अपूर्व काज सभ भेल जाहि पर विस्तार सऽ चर्चा केनाय आवश्यक अछि। एहि संक्षिप्त आलेखमे हुनक परिभ्रमणमे सहयोग कयनिहार सभगोटेके ँ समेटव संभव नहि छल तै ँ गाँधीजीक मिथिला परिभ्रमण विषय पर शोधज्ञ लोकनिक ध्यान आकृष्ट हएब अत्यावश्यक अछि।

संदर्भ

1. मोहन दास करमचंद गाँधी, 2010, **सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा,** सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन-नई दिल्ली, 262.

2. **रामायण,** 1927, 1, अनु. चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा, रामनारायण लाल पब्लिशर और बुकसेलर-इलाहाबाद, 66, 12-14 :

   अथमे कृषतः क्षेत्रं लाङ्गलादुत्थिता ततः।।

   क्षेत्रं शोधयता लब्धा नाम्ना सीतेति विश्रुता।

3. **शतपथ ब्राह्मण, 1937-1940,** चन्द्रधर शर्मा एवम् वंशीधर मिश्र गौड़ (सं.) दूभागमे, बनारस, 1.4.1. 10-19.

4. **वृहद्विष्णु पुराण,** मिथिला महात्म्य, 2.5 : कौशिकी तु समारभ्य गण्डकी मधिगम्यवै।
5. **शक्ति संगम तंत्र,** 7.27. गण्डकी तीरमारभ्य चम्पारण्यान्तकं शिवे।
6. श्याम नारायण सिंह, 1922, **हिस्ट्री ऑफ तिरहुत,** कलकत्ता, 3 : गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिशि पूर्व कौशिकी धारा। पश्चिम बहथि गण्डकी उत्तरहिमवत् वन विस्तारा।।; शिव कुमार मिश्र, 2002, **मिथिला राज्य : एक एतिहासिक तथ्य,** पटना, 2-5.
7. **आत्मकथा,** 262.
8. **ओतहि,** 262.
9. के.के. दत्ता, 1969, **गाँधीजी इन बिहार,** पटना, 4.
10. **आत्मकथा,** 263.
11. दत्ता, **ओतहि,** 3; बी.बी. मिश्र, 1963, **महात्मा गाँधीज मूवमेंट इन चम्पारण 1917-18,** पटना, 23.
12. **ओतहि,** 4.
13. डा. राजेन्द्र प्रसाद, 1957, **आत्मकथा** (अंग्रेजी), बंबई, पृ. 83.
14. **बालक,** वाल्युम, IV, 5; दत्ता, **ओतहि,** 5; बी.बी. मिश्र, **उपरिवत्,** 69 : फाइल नं. 27 मे कहल गेल अछि जे एगारह अप्रैल कऽ गाँधीजी मुजफ्फरपुर गेलाह।
15. **आत्मकथा,** 264.
16. **ओतहि।**
17. **ओतहि।**
18. **ओतहि।**
19. **ओतहि,** 265.
20. **ओतहि,** 262.
21. दत्ता, **ओतहि,** 7.
22. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, 1949, **सत्याग्रह इन चम्पारण,** अहमदाबाद, 104.
23. दत्ता, **ओतहि,** 7.
24. डा. राजेन्द्र प्रसाद, **उपरिवत,** 101.
25. भैरव लाल दास, 2014, **गाँधीजी के चम्पारण आन्दोलन के सूत्रधार राजकुमार शुक्ल की डायरी,** दरभंगा, 109.
26. **आत्मकथा,** 266; बी.बी. मिश्र, **ओतहि,** 62-63.
27. **ओतहि।**
28. **ओतहि,** 267.
29. **राजकुमार शुक्ल की डायरी,** 109.
30. **आत्मकथा,** 267, बी.बी. मिश्र, **ओतहि,** 69-70.
31. **ओतहि,** 268.
32. देखू, **आत्मकथा,** 268-69.

33. **राजकुमार शुक्ल की डायरी,** 110.
34. **आत्मकथा,** 270.
35. **प्रताप,** 30 अप्रैल 1917, कानपुर।
36. **ओतहि;** अरविंद मोहन, 2017, **मि.एम.के. गाँधी की चम्पारण डायरी,** प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली 35.
37. **ओतहि।**
38. **राजकुमार शुक्ल की डायरी,** III.,
39. भैरव लाल दास, 2017, **चम्पारण मे गाँधी की सृजन-यात्रा,** बिहार विद्यापीठ- पटना, 90.
40. राजेन्द्र प्रसाद, **उपरिवत,** 126.
41. भैरव लाल दास, **उपरिवत्।**
42. गाँधीजी द्वारा जिला मजिस्ट्रेट, चम्पारणके लिखल गेल पत्र दिनांक 2 मई, 117, गृह विभाग (राजनीति), कार्यवाही, जुलाई, 1917, संख्या 314-340, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।
43. **राजकुमार शुक्ल की डायरी,** 112.
44. दत्ता, **उपरिवत,** 28; **राजकुमार शुक्ल की डायरी,** 113.
45. राजेन्द्र प्रसाद, 1949, **महात्मा गाँधी एण्ड बिहार : सम रेमिनिसेन्सेज,** बंबई, पृ. 14; दत्ता, **उपरिवत,** 28.
46. **राजकुमार शुक्ल की डायरी,** 114.
47. दत्ता, **उपरिवत,** 27; के.के. दत्ता, 1957, **फ्रीडम मूवमेंट इन बिहार,** 1, पटना, 220.
48. दत्ता, **उपरिवत्,** 31-32.
49. **ओतहि।**
50. **ओतहि,** 42.
51. **ओतहि,** 43.
52. **ओतहि,** 44.
53. **ओतहि।**
54. **ओतहि।**
55. **राजकुमार शुक्ल की डायरी,** 120.
56. **ओतहि,** 121 : एतय सऽ ब्रजकिशोर बाबू, राजेन्द्र बाबू, धरणीधर बाबू आऽ राजकुमार शुक्लक संग दोसर दिन बेतिया गेलाह।
57. दत्ता, **उपरिवत,** 48.
58. **राजकुमार शुक्ल की डायरी,** 123.
59. **ओतहि,** 124.
60. **ओतहि,** 125.
61. **ओतहि,** 128-129.
62. दत्ता, **उपरिवत्,** 48.

63. **उपरिवत्,** 51-52.
64. **आत्मकथा,** 272.
65. **उपरिवत्।**
66. **ओतहि।**
67. **ओतहि।**
68. **ओतहि,** 273.
69. राजेन्द्र प्रसाद, **सत्याग्रह इन चम्पारण,** 196; ब्रजकिशोर सिंह, 2009, **नील संघर्ष और गाँधी,** पटना, 152.
70. राजेन्द्र प्रसाद, **उपरिवत्।**
71. भैरव लाल दास, **चम्पारण में गाँधी की सृजन-यात्रा,** 206.
72. **आत्मकथा,** 274; राजेन्द्र प्रसाद, **सत्याग्रह इन चम्पारण,** 199.
73. राजेन्द्र प्रसाद, **सत्याग्रह इन चम्पारण,** 196-197.
74. **ओतहि,** 197.
75. भैरव लाल दास, **चम्पारण में गाँधी की सृजन-यात्रा,** 211.
76. **आत्मकथा,** 273.
77. **ओतहि,** 274.
78. **ओतहि।**
79. दत्ता, **ओतहि,** 73.
80. विजय कुमार (सं.) 2017, **रिकार्ड्स ऑफ दि विजिट ऑफ महात्मा गाँधी इन बिहार इन डिफरेंट फेजेज 1920-1947,** I, डायरेक्टरेट ऑफ बिहार आर्कार्ब्स, पटना, 87.
81. दत्ता, **ओतहि,** 74; विजय कुमार, **ओतहि,** 90 (के.के. दत्ता महोदयक कहब छनि जे गाँधीजी 8 दिसम्बर कऽ मुजफ्फरपुर सऽ मोतिहारी गेलाह जतय जनसभाके सम्बोधित कय साँझ धरि बेतिया चलि गेलाह। 9 दिसम्बर कऽ बेतिया सऽ सोझे मोटरगाड़ी सऽ चलिकय दरभंगामे पौने तीन बजे अपराह्न बेता मैदानमे विशाल जनसभाके सम्बोधित कयलनि मुदा दस्तावेज कहैछ जे मुजफ्फरपुर सऽ गाँधीजी सोझे बेतिया जाय 8 दिसम्बर कऽ कतोक सभाके सम्बोधित कयलनि आऽ 9 दिसम्बर कऽ बेतिया सऽ चलि मोतिहारीमे गोरक्षणीक सभामे भाषण कयलनि आऽ साँझ धरि दरभंगा अयलाह आओर दोसर दिन 10 दिसम्बर कऽ पौने दस बजे बेता मैदानमे विशाल जनसभाके सम्बोधित कयलनि।)
82. विजय कुमार, **उपरिवत्,** I, 36-45, 57.
83. **ओतहि,** 36-48.
84. **ओतहि।**
85. **ओतहि।**
86. **ओतहि।**
87. **ओतहि,** 91.
88. **ओतहि,** 91; मोहनदास करमचंद गाँधी, **यंग इंडिया,** 15 दिसम्बर, 1920.
89. **ओतहि।**
90. **ओतहि,** 91.

91. **ओतहि**, 90; **यंग इंडिया**, 15 दिसंबर, 1920.
92. **ओतहि**, 90.
93. **ओतहि**, 93.
94. **ओतहि**, 39.
95. दत्ता, **ओतहि**, 114-115.
96. **ओतहि**, 115; के.के. दत्ता, 1960, **राइटींग्स एण्ड स्पीचेज ऑफ महात्मागाँधी रिलेटिंग टू बिहार, 1917-1947**, पटना, 10 : एहि पोथीमे दत्ता महोदय कहैत छथि जे 12 अक्टूबर कऽ गाँधी अररिया अयलाह।
97. **ओतहि**, 115.
98. दत्ता, **उपरिवत्**, (1960), 20.
99. दत्ता, **उपरिवत्**, (1969), 115.
100. दत्ता, **ओतहि**।
101. दत्ता, **उपरिवत्**, (1960), 11.
102. दत्ता, **उपरिवत्**, (1969), 199.
103. **यंग इंडिया**, 1927-28, 53.
104. दत्ता, **ओतहि**, (1969), 116.
105. **यंग इंडिया**, 1927-28; दत्ता, **उपरिवत्**, (1960), 219-223.
106. **ओतहि**; दत्ता, **उपरिवत्**, (1960), 219.
107. **ओतहि**; दत्ता, **उपरिवत्**, (1960), 220.
108. **ओत्तहि**; दत्ता, **उपरिवत्**, (1960), 220-221.
109. **ओतहि**।
110. **ओतहि**, 3 फरवरी, 1927, 72-73; दत्ता, **उपरिवत्**, (1960), 235-38.
111. **यंग इंडिया**, 28 जून 1928.
112. **ओतहि**, 23 अप्रैल 1928.
113. **ओतहि**।
114. दत्ता, **उपरिवत्**, (1960), 14.
115. दत्ता, **उपरिवत्**, (1969), 128.
116. **ओतहि**, 128-129.
117. **ओतहि**।
118. **यंग इंडिया**, 1927-28, 77.
119. राजेन्द्र प्रसाद, **महात्मा गाँधी एण्ड बिहार**, 68.
120. **यंग इंडिया**, 1927-28, 74.
121. दत्ता, **उपरिवत्**, (1969), 135-6.
122. **ओतहि**, 140-41.

123. **ओतहि।**
124. विजय कुमार, **उपरिवत्,** II, 512.
125. दत्ता, **ओतहि,** (1969), 142.
126. दत्ता, **उपरिवत्,** (1960), 16.
127. **उपरिवत्,** 18.
128. **ओतहि।**
129. दत्ता, **ओतहि,** (1960), 246-47, 18-19; डी.जी. तेन्दुलकर, 1953, **महात्मा,** विट्ठल भाई के. झावेरी एण्ड डी.जी. तेंदुलकर, बंबई, III, 315.
130. **ओतहि,** 19; विजय कुमार, **उपरिवत्,** 485.
131. दत्ता, **उपरिवत्,** (1969), 153.
132. विजय कुमार (सं.), **उपरिवत्,** 529, फाइल सं. 38/1934.
133. दत्ता, **उपरिवत्,** (1960), 19; तेन्दुलकर, **उपरिवत्,** वाल्युम. III, 315.
134. विजय कुमार (सं.), **उपरिवत्,** 485, 529.
135. दत्ता, **ओतहि,** (1969), 154.
136. **ओतहि;** विजय कुमार, **उपरिवत्,** 529.
137. दत्ता, **ओतहि,** (1960), 248; **दि इन्डियन नेशन,** 6 अप्रैल 1934.
138. दत्ता, **उपरिवत्,** (1969), 159-61.
139. **ओतहि।**
140. विजय कुमार (सं.), **उपरिवत्,** I, 341-42.
141. **उपरिवत्,** 343-45.
142. **उपरिवत्,** 346-365.
143. **उपरिवत्।**
144. **उपरिवत्।**
145. **उपरिवत्।**
146. **उपरिवत्,** 347.
147. **ओतहि।**
148. **ओतहि।**
149. दत्ता, **उपरिवत्,** (1969), 168-69.
150. **ओतहि।**

